चन्दामामा
फ़रवरी १९६७

Chandamama Press
VADAPALANI
MADRAS-26
OFFERS YOU...
FINEST PRINTING.-
Equipped with
PHOTO GRAVURE
KLIMSCH CAMERA
VARIO KLISCHOGRAPH-
-BLOCK MAKING
and a
host of Others....

चन्दामामा

फरवरी १९६७

अमृतांजन
दर्द को फौरन दूर करता है
स्थानी दर्द को दूर करने के लिये दवा खाने की क्या जरूरत ? दर्द की जगह पर अमृतांजन मलिये—दर्द जाता रहेगा, आप राहत महसूस करेंगे। अमृतांजन पेन बाम वैज्ञानिक मिश्रण वाली १० दवाइयों की एक दवा है—मांसपेशियों के दर्द, सिरदर्द, मोच और जोड़ के दर्द के लिये बिल्कुल अचूक है, निर्दोष है, प्रभावकारी है। अमृतांजन का इस्तेमाल सीने में जमा कफ, सर्दी और जुकाम में भी जल्द से जल्द आराम पहुँचाता है। एक बार इतना कम चाहिये कि इसकी एक ही शीशी आपके घर में महीनों चलेगी। आप भी अमृतांजन की एक शीशी बराबर ही पास में रखिये।
अमृतांजन ७० वर्षों से भी ज्यादे दिनों से एक घरेलू दवा के रूप में विख्यात है।
अमृतांजन १० दवाइयों की एक दवा —दर्द और जुकाम में अचूक।
AMRUTANJAN
Pain Balm
AMRUTANJAN
PAIN BALM
AMRUTANJAN LTD.
मोच का दर्द
जितना भी भयंकर हो,
स्थानीय है...
अमृतांजन लिमिटेड
मद्रास – बम्बई – कलकत्ता – दिल्ली
JWT/AM 2818A

स्ट्राबेरी रूबीज़, ग्लेसियर मिंट्स, बटर रैस्पबेरी, चॉकलेट टॉफियां, विम्टो लिकर, पाइनेपल क्रैकल, लॉली पॉप्स लीजिये

LPE-Aiyars DCM 219 (I)

सीखने में देर क्या सबेर क्या!

नन्हे बालक जल्द ही सीख जाते हैं कि पौधे पानी से ही जिन्दा रहते और बढ़ते हैं। यह साधारण सत्य एक बार सीखने के बाद भूलता नहीं।

आप अपने बच्चों को अब दूसरा सबक सिखाइये कि दांतो व मसूढ़ों की रक्षा कैसे करनी चाहिये जिससे वे बड़े होकर आपका आभार मानेंगे कि सड़े गले दांत व मसूढ़ों की बीमारियों से आपने उन्हे बचा लिया।

आज ही अपने बच्चों में सबसे अच्छी आदत डालें — उन्हे दांतो व मसूढ़ों की सेहत के लिये फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना सिखायें। एक दाँत के डाक्टर द्वारा निकाला गया फोरहन्स टूथपेस्ट संसार में एक ही है जिसमें मसूढ़ों की रक्षा के लिये डा. फोरहन्स द्वारा निकाली गई विशेष चीजें हैं। इसके हमेशा इस्तेमाल से दांत सफेद चमकने लगते हैं और मसूढ़े मजबूत होते हैं। "CARE OF THE TEETH AND GUMS", नामक रंगीन पुस्तिका (अंग्रेजी) की मुफ्त प्रति के लिये डाक-खर्च के १० पैसे के टिकट इस पते पर भेजें: मॅनर्स डेन्टल एडवायजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-१.

चन्दामामा
संचालक : चक्रपाणी
हम कई मास से पन्नालाल की कहानियाँ दे रहे हैं। पन्नालाल के कहानियों से, जैसा कि हमें मिले पत्रों से स्पष्ट है, पाठक काफ़ी प्रभावित हुए हैं। वे उन्हें जंची हैं।
कहीं कहीं पन्नालाल मूर्ख-सा लगता है, पर वह हमेशा परोपकारी रहा है। परोपकार से, कोई व्यक्ति समृद्ध बनता हो या न बनता हो, पर उत्तम व्यक्ति अवश्य बनता है।
वर्ष : १८ फरवरी १९६७ अंक : ६
CHITRA

भारत का इतिहास

पहिले सदाशिवराव भाऊ ने बड़ी बुद्धिमत्ता दिखाई। उसने अपनी सेना व सम्पत्ति की वृद्धि के लिए राजपूतों की मैत्री पाने का प्रयत्न किया। ३ अगस्त १७६६ दिल्ली उसके वश में आ गई। इसके बाद भाऊ के कष्ट प्रारम्भ हुए। सूरजमल जिसका भाऊ के साथ मतभेद हो गया था, उसको छोड़कर चला गया। मल्हारराव होल्कर की भी उससे न पटी। दिल्ली पर आक्रमण के कारण भी उसकी कठिनाइयाँ बढ़ीं। अगस्त के मध्य में, वह दिल्ली छोड़कर २०. अक्टोबर १७६० को वह पानीपत पहुँचा।

इस बीच अब्दाली ने अलीगढ़ को अपने कब्जे में कर लिया और उसने अवध के नवाब शुजा उद्दोला से भी स्नेह कर लिया। नवम्बर १७६० को अब्दाली पानीपत पहुँचा।

प्रसिद्ध पानीपत की रणभूमि में अफ़गान सेनाओं और महाराष्ट्र सेनाओं का युद्ध हुआ। अब्दाली के सेना में ३० हज़ार घुड़सवार और ३० हज़ार पदाति थे। मराठों की सेना में ४५,०००। संख्या में ही नहीं, घोड़ों में और बन्दूकों और कवच आदि में अब्दाली की सेना अधिक सन्नद्ध थी।

ढाई महीने तक दोनों सेनाओं के बीच फुटकर युद्ध होते रहे। इनमें मराठों की काफी क्षति हुई। रसद की कमी होने लगी। १४, जनवरी १७६१ महाराष्ट्र सेना शत्रुओं पर आक्रमण करने निकली।

६४. तीसरा पानीपत युद्ध

अब्दाली ने अपना व्यूह इस प्रकार बनाया। मध्य भाग में अब्दाली के वजीर शावलीखान के नेतृत्व में १८,००० सेना तैनात थी। उसके दायें, बायें ओर पांच पाँच हजार की सेना थी। इनमें अधिक घुड़सवार थे। इनके सरदार थे नाजीबुद्दौला और शुजोउद्दौला।

भाऊ ने मराठा सेनाओं को भी तीन भागों में बांटा। बीच की सेना उसके नेतृत्व में थी। बाँयी ओर इब्राहीमगार्दी के सैनिक थे और दाँयी ओर मल्हारराव होल्कर और जान्कोयी सिन्धिया की सेनायें थीं।

मराठों ने तोपों से युद्ध प्रारम्भ किया। वे बड़ी शूरता के साथ लड़े। शुरु शुरु में उनको कुछ कुछ विजय भी मिली। इब्राहीमगार्दी के हमले के कारण नौ हजार रुहेला या तो मारे गये, नहीं तो घायल हुए। इसी प्रकार दुर्रानी की मध्य सेना पर सदाशिवराव भाऊ ने शावलीखान से आक्रमण करवाया। वह करीब करीब जीत भी गया।

परन्तु अब्दाली ने १३,००० सैनिकों को मध्य भाग में भेजा। तब तक मराठाओं का हौसला कम हो चुका था। फिर भी भाऊ जी जान से लड़ने लगा। दो बजे विश्वासराव को बन्दूक की गोली लगी और वह मर गया। इसके बाद भाऊ और साहस के साथ लड़ने लगा। पर कोई फायदा नहीं हुआ। पौने तीन बजे तक मराठे "इस प्रकार बुझ बुझ गये, जिस प्रकार कि आरती का कपूर होता है।"

दुर्रानी के तीन चार घुड़सवारों ने सदाशिवराव के गहनों के लालच में उसका सिर ही काट दिया। इस प्रकार सदाशिवराव

ने अपने देश के गौरव के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिये। परन्तु पानीपत में मराठाओं की जो पराजय हुई, उसका कारण भी वह ही था। उसने दूसरों की सलाह न ली। कुछ गलत योजनायें भी बनाईं। पराजय ही नहीं हुई, अपितु मुख्य मराठा सरदार रणभूमि में मारे गये। कई हज़ार सैनिक, स्त्रियाँ, बच्चे, आदि मार दिये गये।

यह पराजय, महाराष्ट्र के लिए ही कलंक-सी थी। एक पीढ़ी के महाराष्ट्र नेता एक साथ मार दिये गये। हर मराठा घर से, कोई न कोई इस युद्ध में मार दिया गया था। ५०,००० घोड़े, दो लाख पशु, हज़ारों ऊँठ, पांच सौ हाथी, बहुत-सा धन आभूषण भी वे खो बैठे। यह दुर्वार्ता सुनने के बाद, पेशवा अधिक दिन जीवित न रहा। २३ जून १७६१ को वह पूना में दिवंगत हो गया।

पेशवा के आधिपत्य पर ही, यह पराजय कलंक थी। फिर भी मराठों ने अपने को पुनः संगठित किया। पेशवा माधवराव यशस्वी ही न बना, परन्तु उसने प्रथम माधवराव के उद्देश्यों को भी कार्यान्वित करने का प्रयत्न किया। १७७२ में उसका मर जाना पानीपत की हार के समान था।

पानीपत के युद्ध का भारत के इतिहास में एक और परिणाम भी हुआ। मुसलमानों और मराठों ने अपने को इसके कारण इतना बलहीन बना लिया कि अंग्रेजों को इसका लाभ हुआ।

नेहरू की कथा

[३१]

जेल के कर्मचारियों ने कुछ दिनों तक जेल के आँगन से बाहर न जाने दिया। फिर सवेरा होने से पहिले, आधा घंटा बाहर पहरेदार के साथ चलने, भागने की अनुमति दी गई। इतने सवेरे जाने की उनको अनुमति इसलिए दी गई थी, क्योंकि उस समय न जवाहर किसी को देख सकते थे, न कोई ही उनको देख सकता था।

रात में जिस दीप का उपयोग जवाहर करते थे, वह पढ़ने के लिए काफ़ी न था। इसलिए वे जल्दी सो जाते और तीन चार बजे उठ जाते। आकाश में तारे देखने का उनको शौक हो गया। दीवार से ऊपर ध्रुव तारा को देखकर, वे विशेषतः आह्लादित होते।

एक मास तक जेल वार्ड़र और पहरेदारों के जवाहर का कोई साथी न था। उन्होंने उस समय के जेलों की तुलना भारत की परतन्त्रता से की है। जेलों का परिचालन
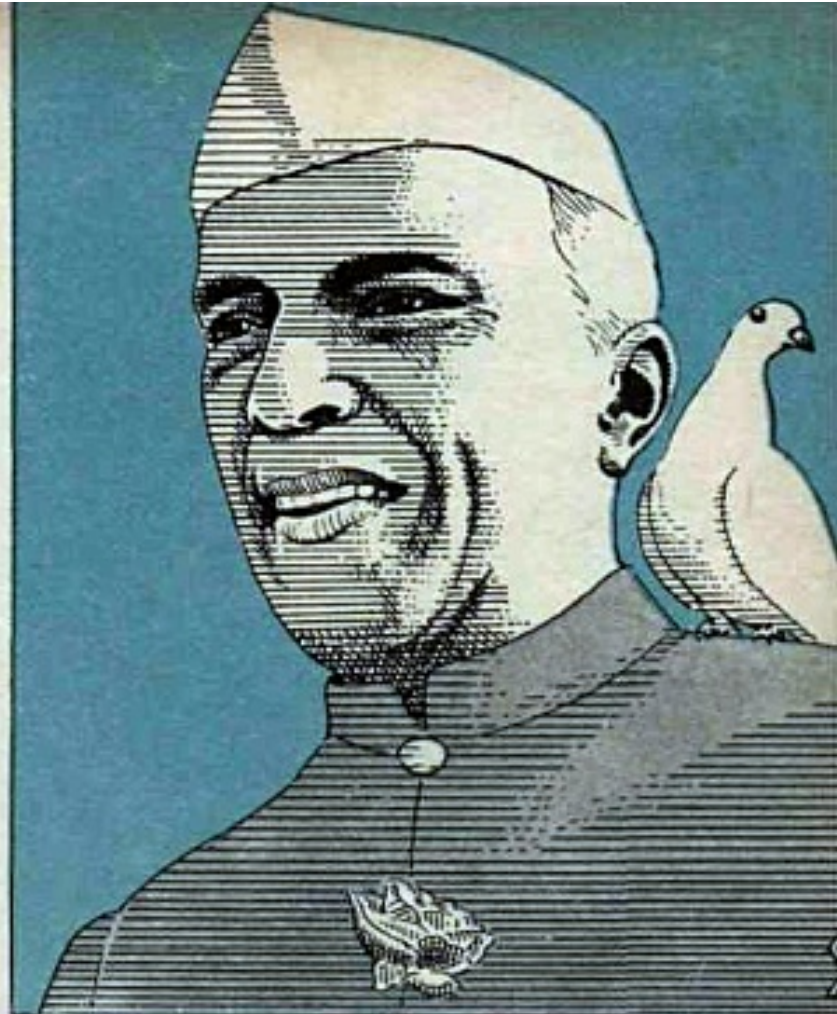
बहुत अंशों तक कैदियों द्वारा होता था। सजा को कम करवाने के लिए कैदी ही वार्ड़र बना दिये जाते थे। वे ही ओवरसीयर, रसोइये और फर्राश का काम करते थे।

जवाहर ने एक और बात देखी। जेल में अधिक कैदी अपराधी नहीं थे। अगर किसी गांव में कोई दंगा होता, तो जो कोई मिलता उसे जेल में डाल दिया जाता। यह उस समय के ब्रिटिश कर्मचारियों की आदत थी। विप्लवकारियों को अकेले जेल में डाल देना एक और बुरी आदत थी।

शान्तिपूर्ण सत्याग्रह के कारण देश में चेतना फैल रही थी। सत्याग्रह के समर्थकों के विरोधियों को यह सत्य मानना पड़ा। जेल की दीवारों के भीतर भी यह अनुभव किया जाने लगा कि स्वतन्त्रता समीप आ गई थी। वार्डर जो बाहर बाजारों में बातें सुनते थे, सोचने लगे कि स्वराज्य आ रहा है। मामूली जेल के कर्मचारी यह देख कुछ आतंकित भी थे।

जेल में अखबार नहीं आया करते थे। एक हिन्दी साप्ताहिक आता था। उसमें कुछ कुछ खबरें भी होती थीं। रोज लाठी चार्ज हुआ करती थी। कहीं कहीं गोलियाँ भी छोड़ी जाती थीं। शोलापुर में मार्शल ला घोषित करके, जिन्होंने राष्ट्रीय झंडा फहराया था उनको दस साल की सज़ा भी दी गई थी। देश में स्त्रियाँ आगे बढ़कर आन्दोलन का परिचालन कर रही थीं। जवाहर की माँ, बहिन, पत्नी, सगी सम्बन्धी, सभी आन्दोलन में सम्मिलित थीं। जवाहर को इस बात पर बड़ा सन्तोष था। पर वे जब कष्ट झेल रही थीं और जोखिमों का सामना कर रही थीं उनको अपना जेल में बैठना अखरा। मगर बाहर जाकर

बिना किसी की संगति के किसी को अकेला जेल में रखना एक बहुत ही कठिन दण्ड है। कुछ ही दिनों में आदमी पगला-सा जाता है। कुछ अपराधियों को ही यह सज़ा मिलनी चाहिये। गोरे रंगवाले कैदियों के लिए हर तरह की सुविधायें थीं। जेल में जो मानवता जवाहर ने देखी, वे लिखते हैं, उन्होंने उतनी जेल के बाहर नहीं देखी थी।

कभी गोखले ने कहा था कि गान्धीजी मिट्टी के माधों को भी वीर बना सकते हैं, यह बात १९३० में साबित हो गई।

वे उनके साथ काम भी नहीं कर सकते थे। इसलिए उन्होंने अपनी दिनचर्या कुछ कुछ "क्लेषपूर्ण" बना ली।

वे रोज तीन घंटे तक चरखा चलाते। दो तीन घंटे नावार बुना करते। इसके लिए आवश्यक व्यवस्था उन्होंने जेल कर्मचारियों से मिलकर करवाली थी।

एक मास बाद, नर्मदा प्रसाद सिंह आये। जवाहर को साथी मिल गये। १९३० के जून के आखिरी दिनों में मोतीलाल और डा. सैय्यद महमूद जेल में आये। वे दोनों जब आनन्द भवन में सो रहे थे, तब पोलीस द्वारा पकड़ लिए गये थे। उनके आने से जेल में कुछ रौनक आ गई।

मोतीलालजी की गिरफ्तारी के कुछ दिन पहिले या बाद में, कॉंग्रेस वर्किंग कमेटी को गैर कानून करार दिया गया था। यानि जब कमेटी की सभा होती, तो सब को एक साथ पकड़ लिया जाता। इसलिए कुछ अतिरिक्त सदस्य बनाये गये। इनमें बहुत-सी स्त्रियाँ थीं। उनमें जवाहरलालजी की पत्नी कमला भी थीं।

जेल में जब मोतीलाल आये, तो उनका स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक न था। यद्यपि जेल

के अधिकारी उनको आवश्यक सुविधायें देना चाहते थे, पर जेल में वे सुविधायें थीं ही नहीं। जवाहरलालजी के जेल में चार ही चार कोठरियाँ थीं। उन चारों में चारों को डाल दिया गया। जेल सुपरिन्टेन्टेन्ट ने कहा कि मोतीलालजी को कुछ बड़े कमरे में रखा जायेगा। पर चारों ने एक साथ रहना चाहा। ऐसा करने से बाकी तीन मोतीलालजी की देखभाल कर सकते थे।

वर्षा ऋतु प्रारम्भ हो गई थी। छत चूती थी। कमरे के अन्दर सीलन थी।

रात के समय मोतीलालजी का बिस्तर कहाँ बिछाया जाये, यह एक समस्या हो गई। रह रहकर उनको बुखार भी आया करता। आखिर जेल के अधिकारियों ने उस जेल से मिलाकर एक बराण्डा बनाने की ठानी। इससे पहिले कि वह तैयार हो सका, मोतीलालजी रिहा भी कर दिये गये और उस बरान्डे का "आनन्द" दूसरों ने लिया।

जुलाई के आखिर में अफवाहें सुनने में आने लगीं कि सप्रू और जयकर, सरकार और काँग्रेस में समझौता करने का प्रयत्न कर रहे थे। वायसराय इर्विन और सप्रू और जयकर में जो पत्र व्यवहार हुआ था, वह पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ। सप्रू और जयकर गान्धीजी से भी मिले। जवाहर यह न समझ सके कि क्यों इन्होंने समझौते के प्रयत्न शुरु किये थे।

२७, जुलाई को सप्रू और जयकर नैनी जेल आये और जवाहर के लिए साथ गान्धीजी का एक पत्र लाये। तब ही जवाहर समझौते के इने प्रयत्नों का रहस्य जान सके। एक लंडन के एक पत्रकार, स्लोकोम्ब ने एक वक्तव्य तैयार करके, मोतीलाल की अनुमति पर उसे प्रकाशित किया। यह जून २५ तारीख के साथ प्रकाशित किया गया। उसी समय मोतीलालजी गिरफ्तार कर लिए गये थे। उस वक्तव्य का सारांश यह था कि यदि सरकार ने कुछ शर्तें मान लीं, तो सत्याग्रह समाप्त किया जा सकता था। इसके लिए गान्धीजी की और उस वर्ष के काँग्रेस अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरूजी की अनुमति भी आवश्यक थी।

पाताल दुर्ग

[९]

[धूमक और सोमक सैनिकों के वस्त्र पहिनकर, कान्तिसेना को ढूँढ़ने के लिए निकले। वे कुछ दूर चलकर एक नदी के पास गये। वे नदी के जल से प्यास बुझा रहे थे कि जंगलियों ने उनको घेर लिया। उनका सरदार विरूप, उनको भाले से मारने ही वाला था कि न मालूम वह क्यों रुका और "हुजूर...हुजूर" करता उनके पावों पड़ गया। बाद में—]

धूमक और सोमक एक क्षण के लिए हक्के बक्के रह गये। विरूप का व्यवहार उन्हें बड़ा विचित्र-सा लगा।

विरूप ने खड़े होकर धूमक और सोमक को नमस्कार करते हुए कहा—"कालशम्बर मान्त्रिक के आप मित्र हैं, इसलिए आप हमारे लिए स्वामी के समान हैं। जो गल्तियां हमने अनजाने की हैं, उन्हें माफ़ कीजिए।"

"हम कालशम्बर के मित्र नहीं हैं, शत्रु हैं।" कहते हुए सोमक ने आँखें लाल कीं। दान्त पीसते हुए, वह नीचे पड़ी तलवार उठाने ही वाला था कि धूमक ने उसे रोकते हुए कहा—"विरूपा, तुमने कैसे जाना कि हम मान्त्रिक के मित्र हैं?"

विरूप ने, धूमक की कमर से लटकते मन्त्रदण्ड को अंगुली से दिखाते हुए

कहा—"मान्त्रिक आज सवेरे ही हमारे गाँव में कुछ देर आराम करके गये हैं। और उन्होंने आज्ञा दी है कि जो कोई मेरा मन्त्रदण्ड लेकर आये, उनका तो आदर आतिथ्य करना और जिनके पास वह न हो, चाहे वे सैनिक हों अथवा नागरिक, उनको जंगल में घुसने से पहिले ही मार दिया जाये।"

इन बातों से धूमक को खुशी तो हुई, पर यह सोचकर डर भी लगा कि इसके पीछे मान्त्रिक की कोई चाल तो न थी।

"हम कालशम्बर के निवास स्थान पर जा रहे हैं। एक राक्षस, जिसका नाम कुम्भीर है, उसका बड़ा शत्रु है। तुम जानते हो, वह कहाँ रहता है। यही नहीं, कालशम्बर मान्त्रिक आज कहाँ पड़ाव करने जा रहा है?" धूमक ने कहा।

"मान्त्रिक, इस जंगल में किस रास्ते कहाँ जा रहा है, यह हमें भी नहीं मालूम है। यह परम रहस्य है। पर वह कहाँ रहते हैं, यह तो तुम भी जानते होगे? दण्डकारण्य में महाकली राक्षस के पाताल दुर्ग के प्रान्त में। मैं तुम्हारे साथ कुछ दूर आकर वहाँ का रास्ता दिखा सकता हूँ।" विरूप ने कहा।

"महाकली राक्षस कौन है?" धूमक ने सोचा। सोमक आश्चर्य में विरूप से कुछ पूछने ही वाला था कि धूमक ने उनको रोकते हुए कहा—"विरूप, जो तुम सहायता करने जा रहे हो, हम उसके लिए बड़े कृतज्ञ हैं। मगर पहिले भोजन कर लें, फिर आराम करके चलेंगे।"

भोजन की बात उठते ही, विरूप ने अपने अनुचरों की ओर मुड़कर पूछा—"सब यहाँ खड़े क्या ताक रहे हो? या

कुछ जाकर इनके लिए खाने का इन्तज़ाम कर रहे हैं कि नहीं ?

"सब इन्तज़ाम पूरे हो रहे हैं। सब भोजन के लिए आ सकते हैं।" एक युवक जंगली ने कहा। वह विरूप का प्रधान अनुचर था।

विरूप ने धूमक और सोमक को राजोचित दावत दी। तरह तरह के माँस, जंगल के फल, शहद आदि परोसे गये। धूमक और सोमक तो बहुत भूखे थे ही, उन्होंने पेट भरकर खाना खाया। अतिथियों के मनोरंजन के लिए जंगली युवक युवतियों ने तरह तरह के नृत्य किये। गीत गाये। लाठी और तलवार के हुनर दिखाये।

धूमक और सोमक अपने भाग्य पर बड़े आनन्दित थे। जिस कार्य को वे बड़ा कठिन समझ रहे थे, वह उनके लिए एक क्षण में आसान हो गया। पहिले कालशम्बर से मिलना और उसके बताये उपाय से, कुम्भीर को खोज निकालना और उसकी कैद से कान्तिसेना को विमुक्त करना.... यह सब उनको यकायक आसान लगने लगा। परन्तु धूमक को कोई सन्देह सताये जा रहा था। कालशम्बर, अपने मन्त्रदण्ड को पाने के लिए कोई चाल चलकर हमें मारने की तो नहीं सोच रहा है ?
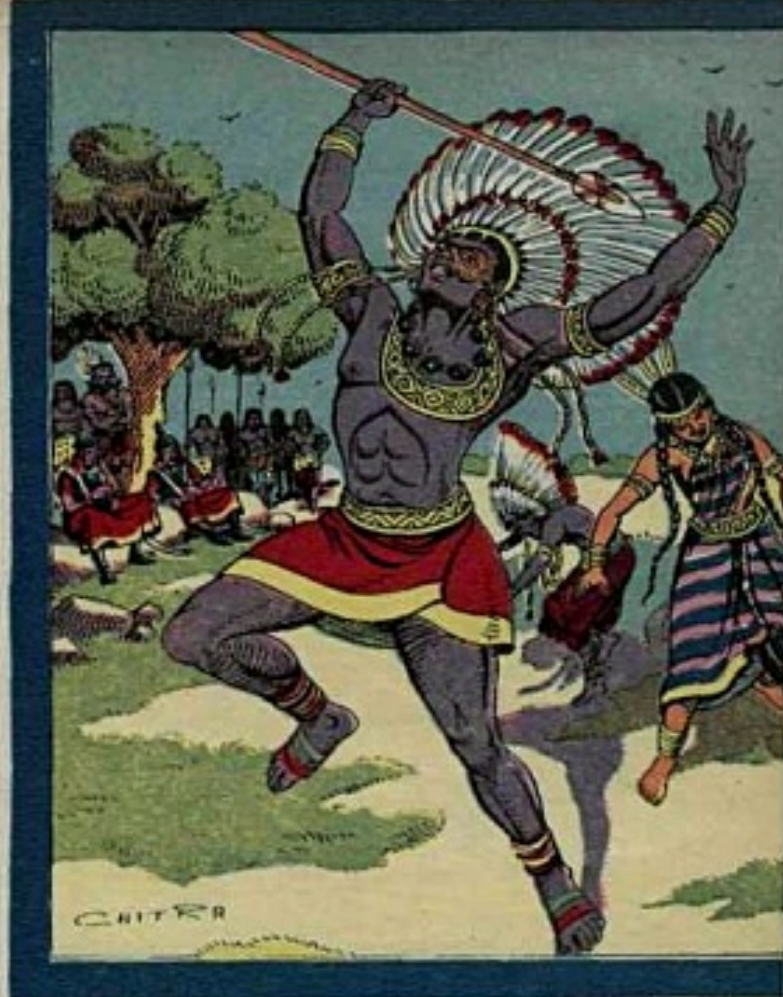
चाहे कुछ भी हो, कितने भी खतरे हों, उनको राजकुमारी कान्तिसेना को, राक्षस के यहाँ से छुड़ाना ही था। धूमक का यह दृढ़ निश्चय था। दावत के बाद थोड़ी देर आराम करके, वे निकल पड़े। इस बार उनके साथ विरूप भी था। उसके पास भाला और बाण तो थे ही, एक लम्बी रस्सी भी उसने कन्धे पर डाल रखी थी।

दोनों जंगल में एक घंटा चल करके एक पहाड़ी प्रदेश में आये। पहाड़ की

तराई में एक नदी बह रही थी। तीनों को उसे पार करना था। पहिले पहल विरूप जा रहा था। वह नदी के पास गया। चकित होकर वह धीमे से चिल्लाया। पीछे घोड़ों पर सवार होकर आते धूमक और सोमक को बुलाया। धूमक और सोमक घोड़ों पर से उतरे। विरूप के पास आये। जो उन्होंने दृश्य वहाँ देखा, वे अचरज में पड़ गये।

नदी के तट पर टूटे हुए भाले, बाण, ज़मीन पर पड़ा खून....ये सब यह बताते थे कि वहाँ कोई भयंकर लड़ाई हुई थी। नदी के किनारे के कीचड़ को, उन लड़नेवालों ने खूब रौंद रखा था। विरूप ने धूमक और सोमक को यह दिखाते हुए कहा—"इस प्रान्त में हमारी जाति के लोग नहीं रहते हैं। भील रहते हैं। उनसे हमारी कोई शत्रुता तो नहीं है, पर मैत्री भी नहीं है। मालूम नहीं हो रहा है कि किनके कारण यहाँ इतनी खून खराबी हुई है। मैं ज़रा नदी के कुछ दूर और जाकर देख आता हूँ। आप यहीं रहिये।" कहकर वह किनारे किनारे कुछ दूर और गया।

उस जगह विरूप को कुछ पद चिन्ह दिखाई दिये। उसे कालशम्बर तुरत याद हो आया। उसको तो कोई हानि नहीं पहुँची है? यह सोचकर, कहीं उसकी खड़ाऊँ के निशान तो नहीं है, उसने झुककर जो देखा, तो उसके सिर से एक भाला छूता गया और एक हाथ आगे ज़मीन में जा चुभा।

विरूप ने तुरत पीठ सीधी की....पीछे मुड़कर जो देखा, तो एक और भाला बिजली की तरह उसकी ओर आने लगा। वह तुरत एक तरफ़ गिर गया। भाला

CHITRA

नदी में जा गिरा। विरूप उठ ही रहा था...."राक्षस सेवक, अब मिले हो.... तुम्हारी आतों की माला बनाकर गले में डालूँगा।" कहता एक हट्टा कट्टा भील उसकी ओर सांड़ की तरह आया।

विरूप क्योंकि इस हमले के लिए तैयार न था, इसलिए भील ने जब उसको कमर पकड़कर झकझोरा तो वह नदी के किनारे जा गिरा। तुरत भील उसकी छाती पर जा बैठा और जोर से उसका गला दबोचने लगा। इतने में विरूप सम्भला। उसने अपने पैरों से भील की गरदन पकड़ी और उसे पीछे धकेल दिया। भील जाकर नदी के पानी में जा गिरा। इससे पहिले कि वह नदी में से निकल पाता, विरूप उस पर लपका। और उसका सिर पानी में डुबो दिया। उसका दम घुटने लगा और जब जब वह ऊपर उठता, तो वह चिल्लाता—"विरूप, मुझे न मारो, मैं पुलिन्द हूँ।"

धूमक और सोमक यह चिल्लाना सुनकर वहाँ भागे भागे गये। जब वे पहुँचे, तो विरूप, भील को पानी में से उसके पैर घसीटकर ला रहा था। यह देख धूमक ने कहा—"विरूप यह कौन है? भील जाति का है? क्या हुआ है?"

"इसने छुपकर मुझे मारने की कोशिश की। मैंने अब इसको सज़ा दे दी है। जो नाम यह बता रहा है, उससे अन्दाज किया जा सकता है कि यह मामूली भील नहीं है, पर भीलों का सरदार है।" विरूप ने कहा।

धूमक और सोमक भील के पास आये, उससे पूछा—"तुम कौन हो? विरूप को तुमने क्यों मारने की सोची थी?"

भील ने पानी उगलकर हाँफते हुए कहा—"राज सैनिक, मेरे साथ न्याय

करें। मेरा नाम पुलिन्द है। भीलों का नायक हूँ। एक घंटा पहिले मेरी जवान दसवीं पत्नी को विरूप और इसके साथी उठाकर ले गये थे। जिन्होंने उनको रोका, उनको मारकर इन्होंने उनके शवों को नदी में फेंक दिया। ये और इसके लोग मेरी पत्नी को किसी राक्षस के लिए उठाकर ले जा रहे थे, यह बात मुझे उन लोगों से पता चली, जो इन से बचकर भागकर मेरे पास आये थे।"

पुलिन्द की बात से सब को बड़ा आश्चर्य हुआ। धूमक कुछ पूछनेवाला ही था कि विरूप ने पुलिन्द के पास जाकर पूछा—"तेरी पत्नी को उठा ले जानेवालों में मैं था, क्या तुम्हारे आदमियों ने यह बताया है? उन्होंने क्या मुझे देखा था? पहिले क्या वे मुझे जानते थे? छी, झूट न बोल। मैं अपने भाले से तुम्हारी आँतें बाहर कर दूँगा।" उसने अपना भाला उठाया।

धूमक ने विरूप का हाथ पकड़कर रोका। "पुलिन्द, तुम कोई गलती करते मालूम होते हो? विरूप पिछले पाँच दस घंटों से हमारे साथ ही है। तुम किसी राक्षस के बारे में कह रहे थे, उसके गुट के लोगों ने ही, विरूप की बदनामी करने के लिए ही उसका नाम लिया होगा। तुम दोनों जातियों में झगड़ा पैदा करने के पीछे भी उसकी कोई स्वार्थ भरी चाल रही होगी। तुम किस राक्षस के बारे में कह रहे हो, यह हम जानते हैं। हम उसे मारने निकले हैं। तुम्हारी पत्नी को भी हम उसके चुंगल से छुड़ायेंगे। तुम बेफिक्र रहो।"

धूमक के यह कहते ही पुलिन्द अपनी गलती जान गया। उसने विरूप से माफ़ी माँगनी चाही। धूमक और सोमक के

संकेत पर उन दोनों ने परस्पर आलिंगन किया। उसके बाद यह जानकर कि धूमक और सोमक नदी पार करने की सोच रहे थे, पुलिन्द ने कहा—"आप यहीं रहो। मैं अपने गाँव के घाट से दो नाव भेजूँगा। उन पर आप और आपके घोड़े नदी पार जा सकते हैं।" यह कहकर वह अपने गाँव की ओर जल्दी जल्दी गया।

थोड़ी देर बाद दो दो भील दो नावों को लेकर आये। धूमक और सोमक एक नाव पर सवार हुए, विरूप और घोड़े दूसरी नाव पर सवार हुए। दोनों नावों को, चप्पू चलाकर, भील नदी के परले पार ले जाने लगे। वे ठीक नदी के बीच में थे कि धूमक की कमर से लटकता मन्त्र दण्ड तुरत साँप की तरह उठा और पूर्व की ओर मुख करके किस किस करने लगा। यह देख विरूप चकित होकर कुछ कहने को ही था कि पहाड़ की चोटी पर से एक गरुड़ पक्षी बाण की तरह तेज़ी से आया और मन्त्र दण्ड को साँप समझकर उसको अपने पंजों में फँसाकर उड़ा ले गया। क्योंकि मन्त्रदण्ड मज़बूत रस्सी से धूमक के कमरे में बंधा था, इसलिए वह भी उसके साथ उड़ने लगा। सोमक ज़ोर से चिल्लाया। उसने बाण छोड़ना भी चाहा, पर यह सोचकर कि कहीं बाण धूमक को न लगे, डरकर रुक गया। इस बीच विरूप "शाम्बवी" इतनी जोर से चिल्लाया कि पहाड़ियाँ गूँज उठीं। उसने अपने कन्धे पर लटकती रस्सी का फंदा बनाकर गरुड़ की ओर फेंका।

(अभी है)

कलियुग भीम

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतारकर, कन्धे पर डाल हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा— "राजा, तुम्हारी तरह कठिन काम सिर पर लेकर सफल होनेवाले कम ही हैं। पर शशिकेतु की तरह प्राप्त सफलता को छोड़ देनेवाला कोई न होगा। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, मैं शशिकेतु की कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यूँ कहानी सुनानी शुरु की।

नवकेतन नगर का पुष्पकेतु नाम का राजा था। वह इतना भला था कि लोग उसके लिए अपने प्राण तक देने को तैयार रहते थे। पर पुष्पकेतु को इसका बड़ा

वेताल कथाएँ
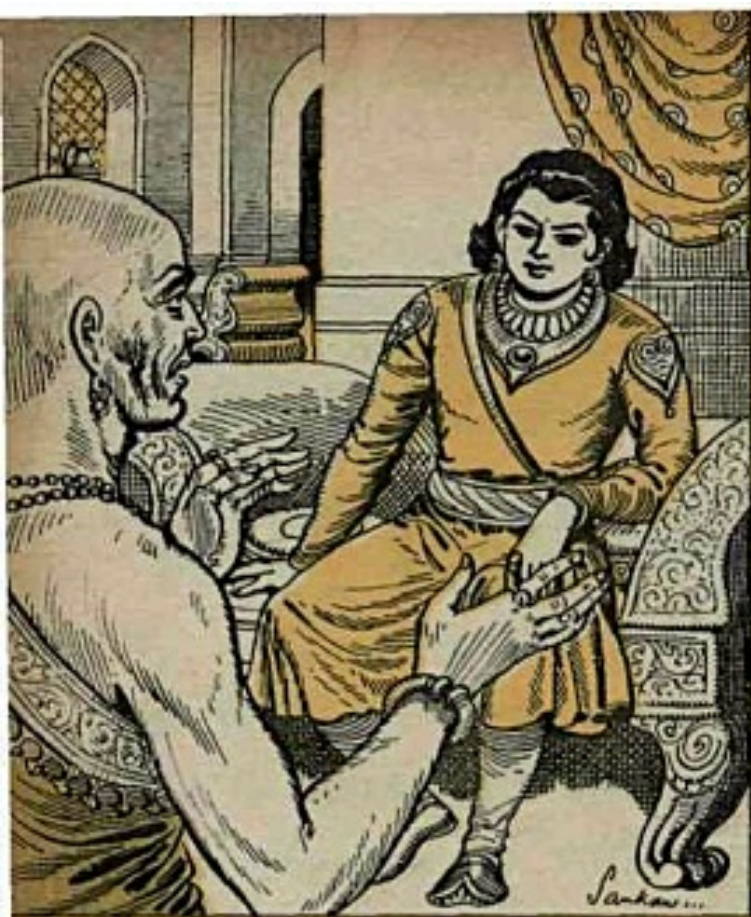
पुरोहित के परामर्श के अनुसार महाराज ने वैसा ही किया। देश की जनता की विधि पूर्वक समाराधना की गई। जो कोई उसके यहाँ भोजन करके जाता, वह राजा को आशीर्वाद देता। सब के आशीर्वाद के फलस्वरूप एक साल खतम होने से पहिले ही राजा के एक सुन्दर लड़का हुआ। उसका नाम शशिकेतु रखा गया।

शशिकेतु में पिता के सब सद्गुण तो थे ही उसमें साथ असाधारण धैर्य, साहस और बल भी बढ़ने लगे। जब वह सयाना हुआ, तो उसके विवाह के लिए राजकुमारियाँ देखी जाने लगीं। पर जब उसको उनमें से कोई न जंची, तो उसने कहा—"अभी मेरे विवाह की क्या जल्दी है?" परन्तु सच कहा जाये, तो उसमें विवाह की इच्छा थी। उसने एक दिन पुरोहित से जाकर पूछा—"क्या आप बता सकते हैं कि मेरे योग्य कन्या कहाँ है?"

"रुद्रजट के राजा जितसेन महाराजा की लड़की के सिवाय तेरी पत्नी होने लायक कोई नहीं है।" पुरोहित ने कहा।

दुख था कि उसके कोई सन्तान न थी। इस दुख को उसने अपने मन में ही छुपाये रखा, आखिर उसने यह बात अपने पुरोहित से कही।

राजपुरोहित महाज्ञानी था। उसने राजा से कहा—"महाराज, सारी प्रजा ही आपकी सन्तान है। परन्तु जैसे आप सन्तान चाहते हैं, वैसे आपकी प्रजा भी चाहती है। प्रजा का सन्तर्पण कीजिये, जो कोई आये उससे पुत्र प्राप्ति के लिए आशीर्वाद पाइये और प्रजा जो हृदय से आशीर्वाद देगी, वह व्यर्थ नहीं जायेगा।"

यह सुनते ही शशिकेतु अपनी तलवार लेकर घोड़े पर सवार हो, रुद्रजट की ओर निकल पड़ा। वह राजधानी में पहुँचकर एक बुढ़िया के घर ठहरा। "मैं तुम्हारे देश की राजकुमारी से विवाह करने आया हूँ। इस बारे में कैसे प्रयत्न किया जाये, यह बताओ।"

बुढ़िया ने लम्बी साँस छोड़ते हुए कहा—"बेटा, तुम जैसे सौ राजकुमारों की उसने पहिले ही शादी कर दी है। उनके सिर कटवाकर तोरण की तरह उसने लगा दिये हैं। यदि मेरी सलाह सुनना चाहो, तो मैं कहूँगी कि जिस रास्ते तुम आये हो उस रास्ते चले जाओ।"

"यह क्या? ऐसा भला क्यों हुआ?" शशिकेतु ने बुढ़िया से पूछा।

"क्या बताऊँ बेटा? हमारे राजा की लड़की जब चार साल की थी, तो एक मान्त्रिक, सुनते हैं, उसको उठा ले गया। फिर राजा ने कहा कि वह अन्तःपुर में सुरक्षित थी। दो साल पहिले वह लड़की सयानी हुई। विवाह के लिए प्रयत्न किये जाने लगे। कई उसके सौन्दर्य के बारे में सुनकर उससे विवाह करने आये। परन्तु राजकुमारी ने शादी के लिए एक शर्त रखी, यहाँ से दस कोस पर भीमवन में कलियुग भीम एक है। जो कोई उसे जीतकर उसका सिर लाकर दिखायेगा वह उसके साथ ही विवाह करेगी और जो यह न कर पायेगा, उसका सिर कटवाकर दरवाजे पर लटकवा देगी। इसलिए तुम उसे विवाह करने का ख्याल छोड़ दो।"

"इतनी दूर आकर क्या हार कर वापिस जाऊँगा? जब राजकुमारी इस तरह आनेवालों का सिर कटवा रही है, क्या

राजा भी उससे नहीं पूछता कि वह वैसा क्यों कर रही है?" शशिकेतु ने पूछा।

"क्या बताऊँ? वह अपनी लड़की से डरता है।" बुढ़िया ने कहा।

अगले दिन शशिकेतु राजमहल में गया, उसने राजा के पास खबर भिजवाई कि क्या राजकुमारी मुझ से विवाह कर सकेगी। उसे सैनिक राजमहल के अन्दर ले गये। सिंहासन पर एक ओर राजा बैठा था और दूसरी ओर राजकुमारी। शशिकेतु ने एक और आसन पर बैठकर अपने काम के बारे में बताया।

राजकुमारी ने कहा—"जो कोई भीमवन में रहनेवाले कलियुग भीम का सिर लाकर देगा, मैं उससे विवाह करूँगी। जो यह न कर पायेगा, मैं उसका सिर कटवाकर किले के फाटक पर लटकवा दूँगी।"

शशिकेतु ने जोर से हँसकर कहा—"उस कलियुग भीम का सिर यदि मैं न ला सका तो मैं अपने रास्ते चला जाऊँगा, पर मैं अपने सिर को फाटक के अलंकार के लिए क्यों दूँगा?"

राजकुमारी ने उसकी ओर तीखी नज़र से देखते हुए कहा—"यहीं आओगे! बिना आये तुम नहीं रह सकते?"

शशिकेतु घोड़े पर सवार होकर भीमवन की ओर निकल पड़ा।

भीमवन बड़ा सुन्दर था। उसमें बहुत दूर जाने के बाद एक घर दिखाई दिया। उस घर के पास जाकर उसने उसके दरवाजे खटखटाये। एक लड़की ने सामने आकर दरवाजा खोला। शशिकेतु को देखकर वह एक क्षण घबराई। फिर पूछा—"तुम कौन हो? यहाँ किस काम पर आये हो? तुरन्त चले जाओ?"

शशिकेतु उसका सौन्दर्य देख कुछ देर चकित खड़ा रहा। "मैं एक काम पर आया हूँ। क्या बता सकती हो, कलियुग भीम कहाँ रहता है?" उसने पूछा।

"यही उसका घर है। तुम्हें उससे क्या काम है?" उसने पूछा।

"उससे युद्ध करके, उसका सिर ले जाकर राजकुमारी से शादी करूँगा।" शशिकेतु ने कहा।

"उसे कोई नहीं जीत सकता।" उस लड़की ने कहा।

"न जीत सका तो उसके हाथ मर जाऊँगा। मेरेलिए दोनों ही बराबर हैं, यदि मैं उसका सिर न ले गया, तो राजकुमारी ही मेरा सिर कटवा देगी। शशिकेतु ने कहा।

"मैं उसकी लड़की हूँ। वह पास में ही किसी पेड़ के नीचे सो रहा है।" उसने कहा।

"अच्छा, जा रहा हूँ।" शशिकेतु जा रहा था कि उस लड़की ने उसको धीमे से बुलाया—"यदि उसका सिर मिल जाये, तो उसे कहीं नीचे न रखना। हाथ में रखकर सीधे मेरे पास आना।"

शशिकेतु उसके दिखाये हुए रास्ते गया। उसने एक पेड़ के नीचे पहाड़ से आदमी को सोते देखा। उसने जब उस कलियुग भीम को एक लात मारी, तो उसने उठकर पूछा—"मुझे क्यों उठाया है?"

"यदि तुम कलियुग भीम हो, तो तलवार लेकर मुझ से लड़ने आओ।" शशिकेतु ने कहा।

कलियुग भीम बिना किसी हथियार के उससे भिड़ पड़ा। शशिकेतु भी बिना तलवार निकाले, उससे हाथापाई करने

लगा। कलियुग भीम नीचे जा गिरा। शशिकेतु ने उसकी छाती पर पैर रखकर कहा—"मैं तुम्हारा सिर काट दूँगा।"

"काट दो, मैं भला तुम्हें कैसे रोक सकता हूँ?" कलियुग भीम ने कहा।

शशिकेतु तलवार निकालकर, एक चोट में कलियुग भीम का सिर काटकर, सिर हाथ में रखकर निकल पड़ा।

उसने दो तीन कदम आगे रखे होंगे कि "का....का...." करके दो तीन भयंकर कौव्वे उसके मुँह की ओर लपके। तुरत शशिकेतु ने कलियुग भीम का सिर छोड़ दिया और मुँह पर अपने दोनों हाथ रखलिए। जब उसने अपने हाथ उठाये, तो न कौव्वे थे, न कलियुग भीम का सिर ही।

उसे न सूझा कि क्या किया जाये। वह कलियुग भीम के घर गया और जो कुछ हुआ था, उसे उसकी लड़की को बताया।

उसने हँसकर कहा—"तुम इतने पराक्रमी हो, पर मेरी सलाह जानते हुए भी कौव्वों से ही घबरा गये। इस बार कलियुग भीम का सिर जब काटो, तो उसे बिना छोड़े, हाथ में रखकर मेरे पास आना।"

शशिकेतु जब पेड़ के पास गया, तो कलियुग भीम इस तरह सो रहा था, जैसे कुछ हुआ ही न हो। शशिकेतु ने उसे उठाया। उससे युद्ध करके, उसे गिराकर, उसका सिर काटकर, हाथ में लेकर सीधे कलियुग भीम के घर गया।

उस लड़की ने उसके हाथ में सिर देखकर कहा—"अब इस सिर को ले जाकर राजकुमारी को दिखाओ। सबके सामने उससे यह मनवाओ कि यह कलियुग भीम का ही सिर है। वह इसे माँगेगी,

शशिकेतु उसका सौन्दर्य देख कुछ देर चकित खड़ा रहा। "मैं एक काम पर आया हूँ। क्या बता सकती हो, कलियुग भीम कहाँ रहता है?" उसने पूछा।

"यही उसका घर है। तुम्हें उससे क्या काम है?" उसने पूछा।

"उससे युद्ध करके, उसका सिर ले जाकर राजकुमारी से शादी करूँगा।" शशिकेतु ने कहा।

"उसे कोई नहीं जीत सकता।" उस लड़की ने कहा।

"न जीत सका तो उसके हाथ मर जाऊँगा। मेरेलिए दोनों ही बराबर हैं, यदि मैं उसका सिर न ले गया, तो राजकुमारी ही मेरा सिर कटवा देगी। शशिकेतु ने कहा।

"मैं उसकी लड़की हूँ। वह पास में ही किसी पेड़ के नीचे सो रहा है।" उसने कहा।

"अच्छा, जा रहा हूँ।" शशिकेतु जा रहा था कि उस लड़की ने उसको धीमे से बुलाया—"यदि उसका सिर मिल जाये, तो उसे कहीं नीचे न रखना। हाथ में रखकर सीधे मेरे पास आना।"

शशिकेतु उसके दिखाये हुए रास्ते गया। उसने एक पेड़ के नीचे पहाड़ से आदमी को सोते देखा। उसने जब उस कलियुग भीम को एक लात मारी, तो उसने उठकर पूछा—"मुझे क्यों उठाया है?"

"यदि तुम कलियुग भीम हो, तो तलवार लेकर मुझ से लड़ने आओ।" शशिकेतु ने कहा।

कलियुग भीम बिना किसी हथियार के उससे भिड़ पड़ा। शशिकेतु भी बिना तलवार निकाले, उससे हाथापाई करने

लगा। कलियुग भीम नीचे जा गिरा। शशिकेतु ने उसकी छाती पर पैर रखकर कहा—"मैं तुम्हारा सिर काट दूँगा।"

"काट दो, मैं भला तुम्हें कैसे रोक सकता हूँ!" कलियुग भीम ने कहा।

शशिकेतु तलवार निकालकर, एक चोट में कलियुग भीम का सिर काटकर, सिर हाथ में रखकर निकल पड़ा।

उसने दो तीन कदम आगे रखे होंगे कि "का....का...." करके दो तीन भयंकर कौव्वे उसके मुँह की ओर लपके। तुरत शशिकेतु ने कलियुग भीम का सिर छोड़ दिया और मुँह पर अपने दोनों हाथ रखलिए। जब उसने अपने हाथ उठाये, तो न कौव्वे थे, न कलियुग भीम का सिर ही।

उसे न सूझा कि क्या किया जाये। वह कलियुग भीम के घर गया और जो कुछ हुआ था, उसे उसकी लड़की को बताया।

उसने हँसकर कहा—"तुम इतने पराक्रमी हो, पर मेरी सलाह जानते हुए भी कौव्वों से ही घबरा गये। इस बार कलियुग भीम का सिर जब काटो, तो उसे बिना छोड़े, हाथ में रखकर मेरे पास आना।"

शशिकेतु जब पेड़ के पास गया, तो कलियुग भीम इस तरह सो रहा था, जैसे कुछ हुआ ही न हो। शशिकेतु ने उसे उठाया। उससे युद्ध करके, उसे गिराकर, उसका सिर काटकर, हाथ में लेकर सीधे कलियुग भीम के घर गया।

उस लड़की ने उसके हाथ में सिर देखकर कहा—"अब इस सिर को ले जाकर राजकुमारी को दिखाओ। सबके सामने उससे यह मनवाओ कि यह कलियुग भीम का ही सिर है। वह इसे माँगेगी,

पर तुम देना मत। तुम उस सिर के सभी टुकड़े करके, जलवा देना। इसके बाद, राजकुमारी से विवाह करने के लिए कोई बाधा न रहेगी। यही नहीं, इस तरह तुम राजकुमारों के अकाल मरण को रोक सकोगे।"

"मैं यहीं वापिस आ जाऊँगा। तुम यहीं रहोगी न?" शशिकेतु ने पूछा।

सिर हिलाकर वह घर के अन्दर चली गयी।

शशिकेतु कलियुग भीम का सिर पकड़ कर, जब राजधानी में पहुँचा, तो रात हो गयी थी। चूँकि सरदियों के दिन थे, इसलिए पहरेदार राजमहल के सामने आग जलाकर सेक रहे थे।

शशिकेतु ने राजमहल में जाकर, राजकुमारी के पास खबर भिजवाई। वह आई। "यह लो कलियुग भीम का सिर लाया हूँ। इसे देख ठीक तरह पहिचान लो।" उसने कहा।

राजकुमारी ने सिर की ओर देखकर कहा—"यह कलियुग भीम का ही सिर है। तुमने शर्त पूरी कर दी है। उसे मुझे दे दो।" राजकुमारी ने कहा।

"उसे तुम्हें देनी की तो कोई शर्त न थी।" कहता शशिकेतु बाहर चला गया।

"उसे मुझे दे दो। मैं किले के फाटक पर लटका दूँगा। तुम इसको क्या करोगे?" कहती राजकुमारी उसके पीछे चली।

शशिकेतु सीधे उस जगह गया, जहाँ पहरेदार आग सेक रहे थे। वह कलियुग भीम के सिर के टुकड़े कर करके आग में डालने लगा। राजकुमारी जोर से चीखी। उससे वह सिर लेने के लिए भिड़ पड़ी। उसने सिर को बाँये हाथ में ले लिया और दाँये हाथ की तलवार जोर से फेंककर

राजकुमारी के दो टुकड़े कर दिये। फिर उसने कलियुग भीम के सिर के टुकड़ों को पूरी तरह जला दिया। घोड़े पर सवार होकर भीमवन गया।

कलियुग भीम की लड़की ने फिर उसे आया देख खुशी के आँसू बहाये। उसने जो कुछ हुआ था, उसे बताया। उसे घोड़े पर सवार करके, अपने नगर ले गया। उससे वैभवपूर्वक विवाह करके वह सुख से रहने लगा।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"राजा, इतने कष्ट उठाकर, कलियुग भीम का सिर जिस राजकुमारी के लिए लाया था, उससे विवाह न करके शशिकेतु ने कलियुग भीम की पुत्री से क्यों विवाह किया? कलियुग भीम की पुत्री ने अपने पिता की हत्या में क्यों सहायता की? पुरोहित की सलाह राजकुमार ने क्यों नहीं मानी? यदि तुमने इन प्रश्नों का जान बूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"शशिकेतु पुरोहित की सलाह पूरी तरह अमल में लाया। कलियुग भीम वही मान्त्रिक था, जो बचपन में राजकुमारी को उठा ले गया था। शायद जो राजकुमारी बनी फिरती थी, वह मान्त्रिक की लड़की ही होगी। उस राजकुमारी के, जो उसके यहाँ इतने साल बन्दी रही, उसको मरवाने के प्रयत्न में कोई आश्चर्य नहीं है।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और फिर पेड़ के ऊपर जा बैठा।

(कल्पित)

शाप विमुक्ति

एक गाँव में एक मामूली किसान रहा करता था। उसके तीन लड़कियाँ थीं। यद्यपि वे सयानी हो गई थीं। पर उनकी शादियाँ नहीं हुई थीं। विवाह के लिए किसान रात दिन मेहनत करके पैसे जोड़ रहा था।

संक्रान्ति के दिन कस्बे में बड़ी पेंठ लगा करती थी। वह जब अपना बछड़ा बेचने निकला, तो उसने अपनी लड़कियों को बुलाकर पूछा—"पेंठ से तुम्हारे लिए क्या लाऊँ?"

बड़ी लड़की ने कहा—"मुझे चान्दनी के रंग की साड़ी ला देना।"

दूसरी लड़की ने कहा—"मेरे लिए धूप के रंग की साड़ी लाना।"

तीसरी लड़की ने कहा—"मुझे कुछ नहीं चाहिए।"

"यह क्या बेटी? जब मैं तुम्हारे बहिनों के लिए साड़ियाँ ला रहा हूँ, तो भला तुम्हारे लिए बिना कुछ लाये कैसे रहूँगा?" किसान ने कहा।

"चूँकि मेरा नाम मल्लिका है, इसलिए मेरे लिए मल्ली के फूल ले आना।" तीसरी लड़की ने कहा।

पर वह मल्लियों का मौसम न था। जब किसान को यह बात याद आई, तो उसे बड़ा दुख हुआ। कस्बे में किसी रईस के घर बेमौसमी मल्ली लग रही होगी, ढूँढ कर, लाना होगा।

पेंठ में बछड़ा बिक गया। किसान ने अपनी बड़ी लड़कियों के लिए साड़ियाँ खरीद लीं। मल्ली के लिए वह कस्बे में घूमता रहा। पर कहीं भी उसको
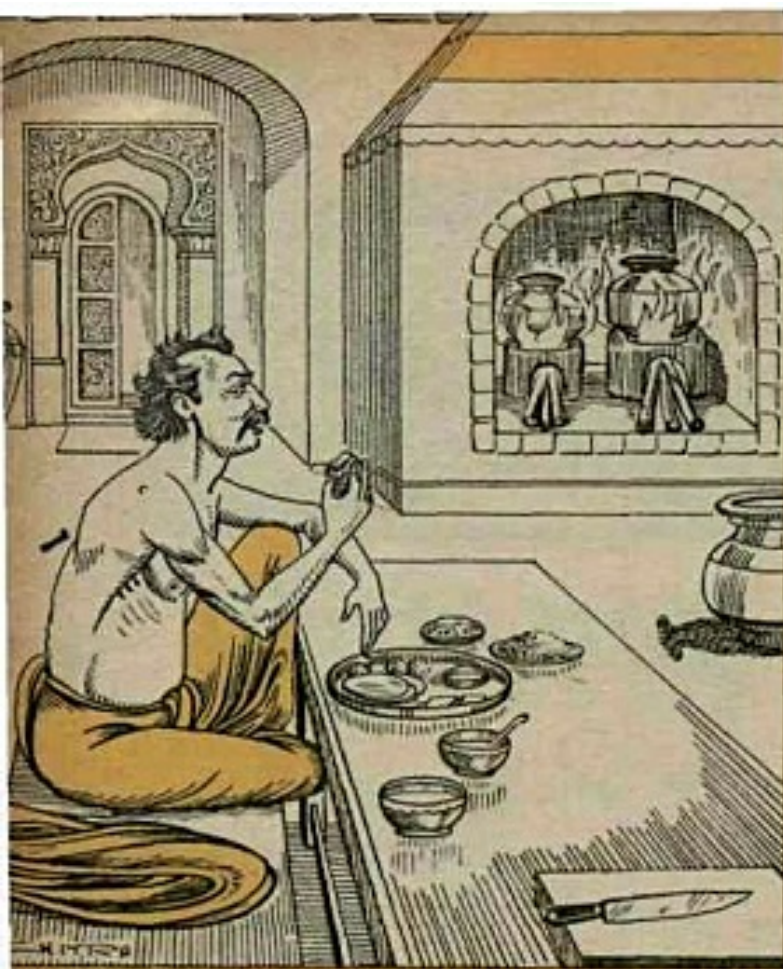
एक फूल न मिला। आखिर थक थकाकर शाम के समय घर की ओर चल पड़ा। उसी समय सारे आकाश में बादल छा गये। तेज हवा के साथ वर्षा भी होने लगी। साथ अन्धकार भी बढ़ता गया।

यह सोच यदि सड़क से गये, तो जल्दी घर न पहुँच सकेंगे, वह पगडंडी से घर की ओर जाने लगा। घने अन्धकार के कारण किसान रास्ता भटक गया। बहुत दूर जाने पर भी गाँव न आया। किसान भीग भाग गया था। निर्जन प्रदेश था, इसलिए किसी से रास्ता पूछ भी न सकता था।

ऐसी हालत में किसान को थोड़ी दूर पर रोशनी दिखाई दी। उस रोशनी के पीछे चलता वह एक बड़े राजमहल में पहुँचा। किसान को यह भी न मालूम था कि उस प्रदेश में उतना बड़ा राजमहल था। उसने सोचा कि यदि वह अन्दर गया, तो पहरेदार उसे रोकेंगे। परन्तु फाटक के पास कोई न था। किसान चौहद्दी पार करके महल के पास गया। वहाँ भी कोई न था "अन्दर कौन है?" वह जोर से चिल्लाया। पर कोई जवाब न आया। महल में सब किवाड़ खुले हुए थे। अन्दर किसी भी कमरे में कोई न था। परन्तु सारा महल इस प्रकार साफ़ था, जैसे वहाँ कोई रह रहा हो।

जब वह कमरों में घूम रहा था, तो उसे एक तरफ़ से पकवानों की सुगन्ध आई। जब वह उस तरफ़ गया, तो एक बड़े कमरे में ताजे पकवान रखे थे। किसान बड़ा भूखा था। इसलिए बिना आगा पीछे देखे, वे सब पकवान उसने खा लिये।

रसोई घर के चूल्हों में अभी गरमी थी। उसने अपने गीले कपड़े उतारे, उन्हें निचोड़ वह सोने के कमरे में गया और वहाँ मुलायम गद्दों पर आराम से सो गया। सवेरा होते ही वह उठा, उसने इधर उधर देखा ताकि वहाँ के लोगों से विदा ले सके, पर वहाँ कोई न था। जब वहाँ कोई न दिखाई दिया, तो वह चल पड़ा। वह महल से निकलनेवाला ही था कि उसे एक तरफ़ मल्ली का पौधा दिखाई दिया। उस पर मल्ली की कलियाँ भी थीं।

किसान बड़ा खुश हुआ। वह जल्दी जल्दी बड़ी बड़ी कलियों को तोड़ने लगा। उसे उनमें किसी के सरकने की ध्वनि सुनाई दी। कोई बड़ी-सी छिपकली पीछे कहीं से रेंगती आई। आँखें लाल करके उसने मनुष्य की भाषा में कहा—"दुष्ट कहीं का। मेरे घर आये। मेरा खाना खाया। मेरी पलंग पर सोये और अब जाते जाते बिना मेरी अनुमति के मेरी मल्लियाँ भी तोड़ना चाहते हो? बस, अब तुम्हारी आयु खतम हो गई है।"

किसान डर के कारण काँपने लगा। दो कदम पीछे रखकर उसने कहा—

"मेरी ही गल्ती है। जो फ़ूल मैंने तोड़े हैं, मैं उनके लिए पैसे दे दूँगा। चाहे तो जो कुछ मेरे पास है, वह ले लो।"

"बकवास! क्या तुम्हारी लड़कियाँ हैं?"

"तीन लड़कियाँ हैं, मैं तीसरी लड़की के लिए ही मल्ली के फ़ूल तोड़ रहा था।" किसान ने कहा।

"तो देखो, मैं तुम्हें सप्ताह भर की मोहलत देता हूँ। अगले सप्ताह इसी दिन या तो तुम अपनी एक लड़की मुझे सौंप जाना और या अपने प्राण देते जाना,

समझे ?" छिपकली ने कहा। किसान ने कहा कि वह जान गया था।

"जो तुमने फूल तोड़े हैं, उन्हें तुम ही रख लो। जब तुम्हारी लड़की आकर यह मल्ली के फूल की कली तोड़ेगी, तो मैं चली जाऊँगी। अगर अक़्लमन्द रही, तो जैसा मैं कहूँगी, वैसा करेगी। फिर जो होगा, सो देखा जायेगा।" छिपकली ने कहा।

तुरत वह कहीं चली गई। किसान उसके सामने गिड़गिड़ा भी न सका। इस भयंकर छिपकली का शिकार होने के लिए उनकी लड़कियों में से कौन-सी लड़की मानेगी? जो कोई भी मानेगी, उसकी क्या गति होगी भगवान! यह सोचता सोचता किसान, रास्ता निकालता अपने घर पहुँच गया।

तीनों बहिनों ने जो कुछ माँगा था, वह मिल गया। परन्तु मल्लिका की मल्ली के लिए उसे कितनी दिक़्क़तें उठानी पड़ी थीं, वह सब सुनाकर उसने पूछा—"उस भयंकर छिपकली के चुंगल में तुम में से कौन जाने को तैयार है?"

"बाप रे बाप, उस छिपकली को देखते ही मेरे प्राण पखेरु उड़ जायेंगे।" बड़ी लड़की ने कहा।

"यह सब मल्लिका की ही करतूत है। उसी ने ही तो बेमौसमी फूल माँगे थे!" दूसरी लड़की ने कहा।

"हाँ, मेरी ही गलती है। मै ही उस छिपकली के पास जाऊँगी।" मल्लिका ने कंपती दुखी आवाज में कहा।

ठीक सात दिन बाद मल्लिका को साथ लेकर किसान निर्जन राजमहल में गया। पहिले की तरह अब भी दरवाजे खुले हुए थे। मल्लिका सीधे मल्ली के पौधे के पास गई और उसने एक फूल तोड़ा।

तुरत छिपकली प्रत्यक्ष हुई, जब मल्लिका ने उसके अंगारे सी आँखें, तहियायी हुई त्वचा, गन्दा, लाल मुख देखा, तो उसे बड़ा बुरा लगा। वह काँपने लगी।

"तुम्हारा नाम क्या है?" छिपकली ने बड़े मीठे ढ़ंग से पूछा।

"देखो, मल्लिका तुम्हें यहां कोई खतरा नहीं है। अगर तुम समझदारी के साथ रही, तो तुम्हें बहुत-सा आराम भी मिलेगा। इस महल में तुम्हें कोई कमी न होगी। जहाँ तुम चाहो वहां रह सकती हो, जब कभी तुम मुझ से बात करना चाहो, तो एक मल्ली की कली तोड़ना और मैं आ जाऊँगी।" कहती छिपकली फिर पौधों में चली गई।

किसान और मल्लिका ने तीन दिन उसी महल में काटे। उन्हें वहां कोई न दिखाई दिया। परन्तु तीनों पहर खाना बनता था, उन्हें किसी चीज़ की कमी न थी।

"अब तुम घर चले जाओ। मां और बहिनें तुम्हारी इन्तज़ार कर रही होंगी।" मल्लिका ने किसान से कहा। किसान ने भी सोचा कि उसका वहां रहना ठीक न था। वह घर चला आया और अपने खेती के काम में लग गया।

मल्लिका अपने पिता को फाटक तक छोड़ने गई। मल्लिका ने अन्दर वापिस आते, एक मल्लिका की कली तोड़ी। तुरत भयंकर छिपकली पौधे के पीछे से आयी।

उस छिपकली को देखकर मल्लिका को दया आ गई। उसे लगा, जैसे वह किसी कष्ट में हो। उसने सोचा कि उसके कष्ट का निवारण करने के लिए यदि उसने कुछ किया, तो अच्छा रहेगा।

उसने छिपकली से कहा—"आपने मुझे और मेरे पिता को, जो आतिथ्य दिया है मैं उसके लिए कृतज्ञ हूं। मैंने उनको भेज दिया है। मैं यथाशक्ति जैसे आप कहेंगी, वैसा करूँगी।"

"क्यों मल्लिका ये बातें तुम मन से कह रही हो? तुम बहुत सुन्दर हो। मेरा भोंड़ापन देख तुम्हें नफरत नहीं हो रही है, यह कितने आश्चर्य की बात है? तुम्हारा कितना अच्छा हृदय है?" छिपकली ने कहा। उसकी आँखों में आँसू देख मल्लिका का हृदय पिघल उठा।

"आपको देखकर मुझे कोई नफरत नहीं हो रही है। मैं आपसे बहुत मिल जुल कर रहूँगी। कुछ भी हो, मैं आपको नहीं छोड़ूँगी।" मल्लिका ने कहा।

"देखो, मल्लिका मेरी सब आशायें तुम पर ही हैं। अगली अमावस्या के अगले दिन मैं तुम्हें अपने घर जाने की अनुमति देती हूं, जाकर वह तीन दिन रहना और तीसरे दिन वापिस चला आना। ये तीनों दिन मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करती रहूँगी। अगर तीसरे दिन तुम न आयीं, तो मैं आग में गिर कर टिड्डे की तरह हो जाऊँगी। मैं तुम पर विश्वास करके तुम्हें भेज रही हूँ। मुझे धोखा न देना।" छिपकली ने कहा।

अमावस्या आई। अगले दिन अपने पिता के घर गई। उसे देखते ही, उसके माँ बाप और बहिन भी बड़ी खुश हुईं। उन्होंने कभी सपने में भी न सोचा था कि वे फिर कभी मल्लिका को देख सकेंगे। उन्होंने मल्लिका से छिपकली के बारे में तरह तरह के प्रश्न किये। मल्लिका ने बताया कि छिपकली क्रूर न थी। उसे देखकर पत्थर दिल भी पिघल जायेंगे। न

न सोनेवाला

काश्मीर देश में प्रवर्धन महाराजा के कोई लड़का न था। पद्मनी नाम की एक लड़की अवश्य थी। पिता के लाड़ के कारण पद्मिनी का पालन-पोषण यूँ हि कुछ ढ़ीला रहा।

एक बार प्रवर्धन को अपने सामन्तों के साथ यवनों से युद्ध करने के लिए जाना पड़ा। उसने पद्मिनी से सावधानी से रहने के लिए कहा। उसकी सहेलियों को भी हिदायत की कि वे उसकी अच्छी तरह देख भाल करें।

पिता के चले जाने के बाद पद्मिनी को और स्वतन्त्रता मिल गई। वह रोज उद्यान के नाले में जलक्रीड़ा किया करती।

कुछ दिन बीत जाने के बाद पद्मिनी को एक बात सूझी। राजमहल से कुछ दूरी पर एक पोखर था। कहा जाता था कि वह पोखर और उसके चारों ओर के पेड़ एक गन्धर्व के थे। उसमें कोई स्नान न किया करता था। यह पद्मिनी भी जानती थी। उसको उसमें तैरने की सूझी। उसने पहिले यह बात अपनी सहेलियों से न कही। वह उनको उस तरफ टहलाने के लिए ले गई। उनके बहुत मना करने पर भी वह पोखर में उतर गई और तैरती तैरती पोखर के बीच में चली गई।

"कुछ भी हो, चलो हम सब भी तैरकर जायें और राजकुमारी को जबर्दस्ती बाहर निकाल लायें।" यह सोच सहेलियाँ भी पोखर में उतरीं और वे भी उसकी ओर तैरने लगीं।

रामनरेश

उन्होंने अभी चार हाथ ही मारे होंगे कि पद्मिनी ज़ोर से चिल्लायी और फिर पानी में डूब गई। सहेलियां डरती डरती किनारे की ओर चली आयीं। वे किनारे पर बहुत देर खड़ी रहीं, पर पद्मिनी का कहीं पता न था। अगले दिन सवेरे पद्मिनी स्वयं गीले कपड़े पहिने घर चली आयी। सहेलियों ने बहुत पूछा, पर उसने कुछ नहीं बताया कि वह कैसे डूबी थी और फिर कैसे वापिस आ गयी थी।

इस घटना के छः मास बाद प्रवर्धन महाराजा युद्ध से वापिस आया, पद्मिनी और उसकी सहेलियां उसका स्वागत करने गई। पद्मिनी तब छः महीने की गर्भिणी थी। यह देख पिता ने पूछा "क्यों, क्या हुआ? हमारे वंश पर तुमने कलंक लगाया है।"

पद्मिनी सिर झुकाये झुकाये, जो कुछ हुआ था, उसे अपने पिता को बता दिया। वह अपनी सहेलियों की बात ठुकराकर जंगल के बीच के पोखर में तैरने गई। उसे गन्धर्व, या नाग, या यक्ष, या कोई और पोखर के तह के राजमहल में ले गये। उसमे ज़ोर जबर्दस्ती की, अगले दिन जब उन्होंने छोड़ दिया, तो वह घर वापिस चली आयी।

यह देख कि उसकी लड़की ने जान बूझकर गल्ती न की थी, पिता ने उसको माफ़ कर दिया। यथासमय पद्मिनी ने एक लड़के को जन्म दिया। उसमें कोई भी खराबी न थी। प्रवर्धन ही उसके लिए नाना और पिता था। वह उसे बड़े प्यार से पालने पोसने लगा। उसका उन्होंने प्रगल्भ नाम रखा।

प्रगल्भ के पन्द्रह सोलह वर्ष हुए। उसकी शिक्षा पूरी हुई। एक दिन प्रवर्धन

अपने नाते के साथ वन में टहलने गया। थक थका गया और संगमरमर के फर्श पर लेट गया।

तुरत प्रगल्भ ने कहा—"नाना! मैं बहुत दिनों से देख रहा हूँ। तुम बूढ़े हो गये हो। तुम अपना मुकट मेरे सिर पर रखो और आराम से घर में रहो।"

प्रवर्धन ने सोचा कि यह बचपना था। "अरे जल्दबाजी क्यों करते हो! मेरे बाद तुम ही तो गद्दी पर आओगे, तुम ही मेरे उत्तराधिकारी हो।"

फिर एक बार ऐसा हुआ। उद्यान में बहुत देर चलने के बाद, महाराज के पैरों में दर्द हो गया और वह एक चबूतरे पर बैठ गया।

प्रगल्भ ने खिझकर कहा—"तुम चल भी नहीं सकते हो! मेरा राज्याभिषेक करके तुम आराम से घर में बैठो।"

"अरे शरारती पगले! न मालूम तुम्हें ये बातें कौन सिखा रहा है! पर वे तुम्हारा भला नहीं चाहते हैं। जब तक मैं जिन्दा हूँ, तब तक मेरी गद्दी पर कोई नहीं आ सकता। मेरे बाद वह सिंहासन तुम्हारा ही होगा।" प्रवर्धन महाराज ने कहा।

"अगर तुमने खुशी खुशी गद्दी न दी, तो जबर्दस्ती मुझे गद्दी लेनी पड़ेगी।" कहकर प्रगल्भ गुस्से में वहाँ से चला गया और घर जाकर उसने अपनी माँ से कहा—"माँ, मैं जा रहा हूँ।" जब माँ ने जाने का कारण पूछा, तो उसने बताया कि नाना उसका राज्याभिषेक नहीं कर रहा था। माँ ने भी उसकी बातों को बचपना समझा।

परन्तु प्रगल्भ सचमुच चला गया, वह दो तीन दिन चलकर सुपर्ण नाम के एक छोटे राजा के पास गया और उसने उससे नौकरी माँगी।

"कौन हो तुम ? तुम क्या काम कर सकते हो ? कितनी तनख्वाह चाहिये ? सुपर्ण ने प्रगल्भ से पूछा।

"चाहे मैं कोई भी हूँ ? जो काम बताओगे वह करूँगा। वेतन के बारे में कभी कुछ नहीं कहूँगा। एक साल आपके यहाँ काम करूँगा। यदि मेरे काम से आप खुश न हों, तो मुझे कुछ न देना। यदि खुश हों, तो जो कुछ माँगूँ वह देना।" प्रगल्भ ने कहा।

सुपर्ण इसके लिए मान गया। जब नाता उसको न दिखाई दिया, प्रवर्धन में सन्तान की इच्छा प्रबल होने लगी। उसने अपने नगर के समीप के एक किसान की लड़की से शादी कर ली, उसका नाम चम्पकवती था।

एक वर्ष बीत गया। सुपर्ण प्रगल्भ की सेवाओं से पूर्णतः तृप्त हो गया।

प्रगल्भ ने उसके पास आकर कहा—"मैंने साल भर आपके यहाँ काम किया है। यदि आपको मेरा काम पसन्द आया हो, तो मेरी इच्छा पूरी कीजिये।"

"क्या चाहते हो ?" सुपर्ण ने पूछा।

"आप तुरत अपनी सेनाओं को लेकर, प्रवर्धन महाराजा पर आक्रमण करने के लिए निकलिये।" प्रगल्भ ने कहा।

सुपर्ण ने चकित होकर कहा—"यह क्या इच्छा है ? वे मेरे सम्राट हैं। मैं उनका सामन्त हूँ।"

"मैं भी कोई पराया नहीं हूँ। मैं उस सम्राट का उत्तराधिकारी हूँ। इस युद्ध में यदि वे हार गये तो मैं ही सम्राट हूँ। यदि वे जीत गये, तो मेरा ही नुक्सान है। वचन देकर न मुकरो।" प्रगल्भ ने कहा। सुपर्ण अपना वचन पूरा करने के लिए सेना को सन्नद्ध करके, प्रवर्धन पर आक्रमण करने गया।

प्रवर्धन के पास सेना तैयार करने का समय न था। फिर भी उसने युद्ध में मर जाना अधिक उपयुक्त समझा, पर अपने नाते को सिंहासन देकर, जंगल में न जाना चाहा।

इतने में चम्पकवती गर्भिणी हुई। उसे महारांजा ने अपने माइके भेजते हुए कहा—"इस युद्ध में, हो सकता है, मैं जीवित वापिस न आऊँ। हो सकता है, तुम्हारे यथा समय लड़का हो। चूँकि वह मेरा उत्तराधिकारी होगा, इस बात के प्रमाण के रूप में, इस हार को उसके गले में डाल देना।" कहकर उसने अपने गले का हार उसे दे दिया।

चम्पकवती माइके चली गई।

युद्ध में प्रवर्धन मारा गया, प्रगल्भ ने अपना राज्याभिषेक किया। राजमहल में जो पहिले काम करते थे, उन सबको उसने हरा दिया। उसने अपने नौकर नियुक्त किये। चूँकि उसका शासन बड़ा अत्याचार पूर्ण था, इसलिए प्रजा जल्दी ही उससे असन्तुष्ट हो उठी।

चम्पकवती ने एक लड़के को जन्म दिया। यह सोच कि उसका प्रगल्भ के पास रहना ठीक न था, चम्पकवती का पिता उस बच्चे को, कहीं दूर देश ले गया और उसे एक घर पालने पोसने के लिए आवश्यक धन भी दे आया।

सच कहा जाये, तो प्रगल्भ न जानता था कि उसके नाना ने फिर शादी कर ली थी और उसकी पत्नी राज्य में ही थी और जिस सिंहासन को उसने दुराक्रमण करके हथिया लिया था, उसका उत्तराधिकारी कहीं बड़ा हो रहा था।

सोलह वर्ष बीत गये। चम्पकवती का लड़का बड़ा हुआ। उसका नाम प्रद्योत
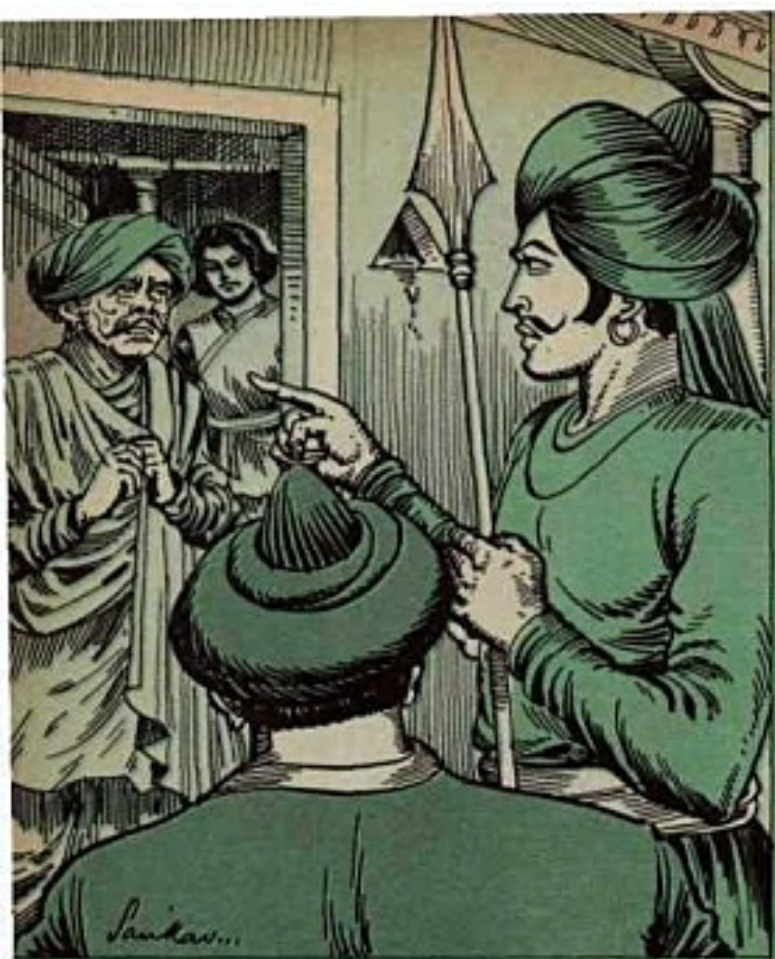
रखा गया। वह वापिस किसान के घर चला आया।

प्रद्योत ने निश्चय रूप से जान लिया कि प्रगल्भ प्रजापीड़क था। प्रजा में उसके प्रति बड़ा असन्तोष था। उसको हटाने के लिए प्रजा प्रतीक्षा कर रही थी। प्रद्योत ने सोचा कि ऐसे को उपाय करके हटाया जा सकता था।

प्रगल्भ कुछ समय से हर रोज एक घर दूत भेजता। उस घर से किसी को बुलाता और रात भर उससे कहानी सुनाने के लिए कहता और अगर उसे वे कहानियाँ न जंचती, तो सवेरा होते ही उसका सिर कटवा देता। इस तरह कई के सिर काट दिये गये थे।

प्रद्योत के आने के कुछ दिन बाद किसान के घर राजदूत आये। "राजा की आज्ञा है कि आज आपके घर से कोई जाये और उनको कथा सुनाये।" वे यह कहकर चले गये।

किसान बड़ा दुःखी हुआ। "आज मेरी आयु, खतम हो गई है। मैं ऐसी कौन-सी कहानी सुना सकता हूँ, जो इस दुष्ट को जंचे।" उसने कहा।

"कोई डर नहीं, नाना। मैं जो हूँ उस दुष्ट को कहानी सुनाने के लिए।" प्रद्योत ने कहा।

"तुम राजा के पास जाओगे? मत जाओ, बेटा।" चम्पकवती फूट पड़ी।

"मै बूढ़ा हूँ। आज नहीं, तो कल मर जाऊँगा। मुझे जाने दो, बेटा।" किसान ने कहा।

"मैं क्या इतनी आसानी से मार दिया जाऊँगा। तुम डरो मत।" कहकर, प्रद्योत अन्धेरा होते ही राजमहल में गया। जब वह पहुँचा, तो राजमहल में सब

भोजन कर रहे थे। प्रद्योत जाकर एक पंक्ति में बैठा। परोसनेवाले ने चकित होकर पूछा—"कौन हो तुम?"

"आज रात मैं राजा का अतिथि हूं। परोसो।" प्रद्योत ने कहा।

पंक्ति में जितने लोग बैठे थे, वे सब आश्चर्य में एक दूसरे का मुंह देखने लगे। राजा को कथा सुनाने के लिए राजबन्धु की तरह यूं कोई न आता था। हथेली में प्राण रखकर वे आते थे और सवेरे तक उनको खो बैठते थे।

परोसनेवाले ने बिना कुछ कहे प्रद्योत को भोजन परोसा। प्रद्योत ने पेट भरकर खाना खाया। "अब मुझे राजा के पास ले जाओ।"

नौकर प्रद्योत को राजा के शयनकक्ष में ले गये। प्रगल्भ अपने पलंग पर दीवार की ओर मुड़कर लेटा हुआ था।

"आज रात आपको कथा सुनाने आया हूं।" प्रद्योत ने कहा।

"तो सुनाओ।" प्रगल्भ ने बिना आगन्तुक को देखे ही कहा।

प्रद्योत, परदेश में जो जो कहानियां सुनी थीं, वह सुनाने लगा, सवेरा हुआ।

प्रगल्भ ने बिस्तर पर करवट लेकर कहा—"तुम अच्छी कहानियां सुनाते हो।"

"तुमने उन्हें सुना हो तब न? तुम तो रात भर आराम से सोते रहे।" प्रद्योत ने कहा।

प्रगल्भ उसके बात करने का यह तरीका देख गरम हो उठा। "अरे यूँ न बक। मैं तो कभी नहीं सोया, कभी भी मेरी आँखें न मुँदी।"

"अगर यह सच है, तो तुम किसी नाग के पुत्र हो।" प्रद्योत ने कहा। प्रगल्भ ने गुस्से में तलवार निकालनी चाही।

"जल्दी न करो। तलवार मेरे पास भी एक है। तुम अपनी माँ के पास जाकर पूछ आओ कि कैसे पैदा हुए थे।" प्रद्योत ने कहा।

प्रगल्भ तुरत उठा। गया और कुछ देर बाद आकर उसने कहा "जो तुमने कहा है, वह ठीक है। मेरा पिता मामूली आदमी नहीं है।"

"तो खैर, मैं तुम्हें नीन्द का एक तरीका बताता हूँ। यहाँ से कुछ दूर गन्धर्व का एक पोखर है। उसमें कूदकर कुछ देर तैरो। उसके बाद तुम आराम से सो सकोगे।" प्रद्योत ने कहा।

उसी दिन प्रगल्भ गन्धर्व पोखर में अपने साथियों के साथ स्नान करने गया। सबने उसको पानी में डूबते देखा। फिर उसका कहीं पता न लगा। अन्धेरा होने तक उसके लोग किनारे पर उसके आने की प्रतीक्षा करते रहे। पर वह न आया। वे वापिस चले आये।

सारे शहर में मालूम हो गया कि राजा अदृश्य हो गया था। सबने उत्सव मनाये, पांच छः दिन बाद मन्त्रियों ने प्रगल्भ की उत्तर क्रियायें कीं। सिंहासन के उत्तराधिकारी का निर्णय करने के लिए तेरहवें दिन सभा बुलायी गई, प्रद्योत ने उस सभा में आकर कहा—"मैं प्रवर्धन महाराजा का लड़का हूँ। यह देखो मेरे गले में मेरे पिता का हार।"

सबने उस हार को पहिचाना। प्रद्योत का राज्याभिषेक वैभवपूर्वक हुआ। किसान सकुटुम्ब, महल में आया। सब सुख से रहने लगे।

गृह पिशाच

महाकोशल देश में प्रायः हर घर में एक पिशाच रहा करता था। चूँकि लोग अनाड़ी थे, इसलिए उनको गृह देवता मानते थे। उन पर बलि भी चढ़ाते।

अपर्ण नाम के क्षत्रिय के घर एक पिशाच रहा करता था। वह घोड़ों को, दाना देता। पानी देता। परन्तु उस पिशाच को सब घोड़ों से एक घोड़ा सबसे अधिक पसन्द था। इसलिए उस घोड़े को अधिक दाना और पानी दिया करता।

अपर्ण ने एक दिन एक नौकर को बुलाकर कहा "भाई, तुम घोड़े की तो बहुत अच्छी तरह देख भाल करते हो, परन्तु औरों को नहीं देख रहे हो।

"मैं नहीं हुज़ूर, गृहदेवता ही ऐसा कर रहा है।" नौकर ने कहा।

अपर्ण इससे सन्तुष्ट न हुआ। एक दिन वह घोड़े देखने आया। एक घोड़े के सामने अधिक घास देखी। इतने में उसके गले पर पिशाच ने जोर से लात मारी। वह चोट खाकर नीचे गिर गया।

उसके बाद घोड़ों की देखभाल पिशाच ही किया करता। अपर्ण भी रोज उसे छिपकलियाँ खिलाता। इतने में दसहरा आया, अपर्ण ने उस दिन उत्सव मनाया। अपने नीचे के नौकरों को उसने खूब खिलाया पिलाया। नये कपड़े दिये। पिशाच को भोजन के अलावा उसने रेशमी कपड़े भी दिये।

दीवाली के अभी कुछ दिन ही बाकी थे कि एक दिन जोर से वर्षा होने लगी। अपर्ण, जो अपने नौकर चाकरों के साथ

शिकार खेलने गया था, वर्षा में फँस गया। जब वे वापिस आये, पूरी तरह भीग गये थे। अपर्ण ने घोड़ों को घर के सामने छोड़कर स्वयं कपड़े बदल लिए। उसने सोचा कि पिशाच उनको पोंछ देगा, अस्तबल में बांधकर खिला पिला देगा। परन्तु घोड़े बाहर ही खड़े थे और ठंड के कारण उनका हिनहिनाना उसे सुनाई दिया। उसने खिड़की में से देखा कि पिशाच रेशम के कपड़े पहिनकर घुड़साल के द्वार के पास खड़ा खड़ा वर्षा का आनन्द ले रहा था।

"घोड़े बाहर खड़े खड़े वर्षा में भीग रहे हैं। उनको क्यों नहीं देखते?" अपर्ण जोर से चिल्लाया।

"वर्षा थमने दो। उनकी बात तब देख लूँगा। अगर वर्षा में गया, तो क्या रेशमी कपड़े खराब नहीं हो जायेंगे?" पिशाच ने कहा।

* * *

उस देश में दो भाई थे, वे अपने पिता की भूमि को आधा आधा बांटकर खेती किया करते थे। पर न मालूम क्यों बड़े भाई के खेत में अधिक फसल होती थी और छोटे भाई के खेत में कम, यद्यपि दोनों के खेत बराबर थे।

फसल कटने का समय आया। बड़ा भाई जब अपने खेत की ओर जा रहा था, तो उसे एक बौना दिखाई दिया। वह अपने सिर पर एक ही एक धान की बाली ले जा रहा था और यूँ हांफ रहा था, जैसे कोई बोझ उठाकर ले जा रहा हो।

"अरे, बौने क्यों इतने-से बोझ के लिए इस तरह हांफ रहे हो?" बड़े भाई ने हँसते हुए पूछा।

"जो मैं तुम्हारे लिए ढोकर ला रहा हूँ अगर तुम ही उसे ढोकर ले जाओ,

तो तुम्हें मालूम हो जायेगा कि वह कितना भारी है।" कहता वह झट मुड़ा और छोटे भाई के खेत की ओर चलने लगा।

इसके बाद बड़े भाई के खेत में फसल बहुत कम हो गई और छोटे भाई के खेत में फसल दुगनी होने लगी। वह बौना एक पिशाच था। वह बहुत दिनों से बड़े भाई के खेत में फसल दुगना करने के लिए मदद करता आया था। यह बात बड़ा भाई न जानता था। उसने उसका मजाक करके, उसका गुस्सा मोल लिया।

इससे भी अधिक एक और विचित्र घटना घटी, दो तरफ के खेतों में दो पिशाच काम किया करते थे। एक खेत में तो अच्छी फसल हुआ करती थी। दूसरे खेत में खूब घास उगा करती। इसका भेद एक दिन बाहर हुआ। एक पिशाच दूसरे के खेत से धान चुराया करता और दूसरा दूसरे के खेत से घास। इस तरह चोरी करते हुए दोनों ने एक दूसरे को एक दिन पकड़ लिया।

"अरे, तुम हमारे खेत से धान चुराते हो!" पिशाच ने पूछा।

"हमारे खेत में से तुम ही घास चुराते हो न?" दूसरे ने कहा।

दोनों पिशाचों की आपस में इतनी हाथापाई हुई कि सारा खेत ही उनकी उछल कूद से खराब हो गया।

इस तरह की कितनी ही और घटनायें थीं। कई का इन पिशाचों के कारण लाभ हुआ और कई का नुक्सान। पर जब गौतम बुद्ध ने महाकोशल में पैर रखा, तो सब पिशाच भाग गये।

गौ की चोरी

एक बार पन्नालाल एक दूर के गाँव के लिए रवाना हुआ। उस गाँव के पटवारी के यहाँ अगले दिन कोई काम था। उसके लिए पटवारी शामलाल ने उसे बुलावा भेजा था। इसलिए धूप के कुछ कम होते ही पन्नालाल निकल पड़ा। शामलाल का गाँव अभी कुछ दूर ही था कि उसे एक अजीब दृश्य दिखाई दिया।

एक काली गौ छलांगें भरती पन्नालाल की ओर आ रही थी। उसे पकड़कर एक आदमी आ रहा था। वह गौ को रोकने का प्रयत्न कर रहा था, पर सफ़ल नहीं हो पा रहा था। गौ उसे खींचती ला रही थी। काँटों और पत्थरों के कारण वह घायल था। उसने पन्नालाल को देखकर—"भाई ज़रा गौ को रोको तो...."

पन्नालाल गौ के सामने गया और हाथ उठाकर "है हैं" कहने लगा। हालाँ कि गौ तेज़ी से भागी आ रही थी, परन्तु पन्नालाल की आवाज़ सुनकर वह रुक गई। उसके यूँ झट रुक जाने के कारण उसकी रस्सी पकड़ा हुआ आदमी आगे गिरा।

पन्नालाल ने रस्सी ले ली और उसे पास के पेड़ से बाँध दी। उस आदमी को उठाकर बिठाया। "क्या किया तुमने? क्यों गौ यूँ भाग रही है?"

"क्यों भाग रही है? सिर फिरा हुआ है, इसलिए भाग रही है। कुछ दिन पहिले ही ढेर-सा पैसा देकर मैंने इसे खरीदा था। जब से खरीदी है, तब से ही यूँ तंग कर रही है।" उस आदमी ने कहा।

उस आदमी ने उठकर कहा—"मेरी छड़ी भी कहीं गिर गई है। आज इसकी जान लेकर रहूँगा, आखिर यह कब तक यूँ नाकों दम करेगी?" कहते हुए उसने पेड़ की टहनी तोड़ी और उसे मारने लपका। गौ ने भी उसको अपनी सींगों से मारने की कोशिश की।

पन्नालाल ने उसकी ओर देखा और उसका गुस्सा ठँडा हो गया।

"उस छड़ी को दूर फेंक दो। तुमने इस तरह के ऊँटपटाँग काम करके ही उसको गुस्सा दिलाया होगा। अगर यह मारनेवाली गौ है, तो मुझे क्यों नहीं मारती?" पन्नालाल ने कहा।

"वह सब तो मैं जानता हूँ। पर अब क्या किया जाय? मुझे ज़मीन पर खींच खींचकर मेरी बुरी हालत कर रखी है। उस पहाड़ के मोड़ पर हमारा गाँव है। मैं चल नहीं सकता। इसे साथ सीधे ढँग से ला नहीं सकता। कौन भला मदद करेगा?" कहता वह आदमी इधर उधर देखने लगा।

"मदद ही चाहते हो, तो चलो, मैं मदद करूँगा।" कहकर पन्नालाल गौ की

रस्सी हाथ में लेकर उस आदमी के साथ चल दिया। रास्ते में उस आदमी ने पूछा—"आप कौन हैं? आपका कौन-सा गाँव है?"

पन्नालाल ने अपने गाँव का नाम बताकर कहा—"कल पटवारी शामलाल के घर कोई काम है, उसके लिए जा रहा हूँ।" पन्नालाल उस आदमी के घर तक गया। उसके यहाँ गौ को बाँधकर उसे चारा वारा देकर, अन्धेरा होते होते शामलाल के घर पहुँचा।

पटवारी शामलाल ने पन्नालाल से कुशल प्रश्न करने के बाद कहा—"देखो

पन्नालाल, मैंने जो दो साल पहिले तुमसे एक गाय खरीदी थी, उसे यकायक बीमारी हो गई है, यह नौकर बता गया है, सवेरे तक वह ठीक थी। न मालूम इस बीच क्या हो गया कि वह चल भी नहीं पा रही है। चार आदमियों को मैंने गाय को उठाकर लाने के लिए भेजा है।"

यह सुन पन्नालाल को बड़ा क्लेश हुआ। इतने में आदमियों ने गौ को लाकर बाड़े में एक तरफ़ लिटा दिया। पशु वैद्य के पास खबर भेजी गई। पशु वैद्य ने गौ को देखकर कहा—"लगता है, यह दो तीन दिन पहिले बियाही थी। कोई बड़ी बीमारी नहीं है, यदि दवा की गई तो ठीक हो जायेगी।"

पटवारी शामलाल ने चकित होकर पूछा—"अरे, दो तीन दिन पहिले कैसे बियाही? हमारी गौ के दो तीन महीने का बछड़ा जो है।" कहकर उसने गौ को पास से देखा और कहा—"यह हमारी गौ नहीं है।"

यह बात सच थी, बछड़ा भी उसके पास नहीं गया था, तो फिर पटवारी शामलाल की काली गौ कहाँ गई?

पन्नालाल को तुरत सन्देह हुआ। जिस गौ को उसने रोका था और उस आदमी के घर ले गया था, वह पटवारी शामलाल की ही गौ थी। उस आदमी ने कहा भी था कि दो दिन पहिले ही उसे खरीदा था।

पन्नालाल किसी के बारे में, जल्दबाजी में बुरा न सोचता था। वह फिर एक बार उस आदमी के घर गया। जब तक सब ठीक ठाक न मालूम कर लिया जाये, तब तक उसने पटवारी शामलाल से कुछ न कहने की ठानी।

शामलाल ने नौकर को बुलाकर कहा—"रे, यह अपनी गौ नहीं है। हमारी गौ बदल गई है।"

बिना नौकर के प्रयत्न के ही, काफ़ी देर बाद, शामलाल की गौ अपने आप भागती हुई आयी और अपने बछड़े के पास खड़े होकर उसे दूध देने लगी। सब बड़े खुश हुए। पन्नालाल भी खुश था।

"बात साफ़ हो गई है। कोई दुष्ट अपनी बीमार गौ को हमारे झुण्ड में हाँक गया है और हमारी गौ को हाँककर ले गया है। इस बीमार गौ की चिकित्सा भी भला क्यों की जाये? मरने दो।" पटवारी शामलाल ने कहा।

"चोर को सज़ा दो। गौ को क्यों मारते हो? चिकित्सा करवाओ। यदि चोर मिल गया, तो हमें एक और गौ मिल जायेगी।" पन्नालाल ने कहा। पटवारी का गुस्सा यह सुनकर जाता रहा।

पन्नालाल तब पहाड़ के मोड़ के गाँव में गया। वहाँ उसने गौ के चोर को देखा। वह आदमी कुछ और घावों के कारण पलंग पर पड़ा था, उस दिन सवेरे ही गौ रस्सी तोड़कर चोर को सींग से घायल करके चली गई थी।

"वह गौ नहीं, मृत्यु है।" चोर ने कराहते हुए कहा।

"फिर तुम मौत को खुद क्यों मोल ले आये? शामलाल से ही क्या तुमने उसे खरीदा था?" पन्नालाल ने पूछा।

"अरे, बाप रे बाप, तो क्या यह पटवारी शामलाल की गौ है?" उसने यूँ अपनी चोरी खोल दी, पटवारी बहुत कड़ा आदमी था। यदि उनको मालूम पड़ जाता कि किसी ने उनकी गौ चुराई है,

तो उसे जीने नहीं देगा, यह चोर भी जानता था।

उसने पन्नालाल के सामने गिड़गिड़ाते हुए कहा—"बाबू, आप पटवारी को नहीं जानने दीजिये कि मैंने इस गौ को चुराया था। जो कुछ मैंने किया था, उसकी सजा भुगत चुका हूँ।" उसने पन्नालाल के सामने चोरी कबूल कर ली।

चोरी की काली गौ ने जब खाना पीना नहीं छुआ, तो डर हुआ कि वह मर जायेगी। बिना दूध के बछड़ा मर गया, पहाड़ी प्रदेश में गौवों का झुण्ड चरने जाया करता था। चोर सवेरा होने से पहिले ही जबर्दस्ती अपनी गौ को चराता चरागाह में ले गया। उसे झाड़ियों के पीछे लिटा दिया। धूप निकलने के बाद गौवों का झुण्ड वहाँ चरने आया। जब चरानेवाले किसी पेड़ की छाँह में सो रहे थे चोर ने अपनी गौ-सी एक गौ चुन ली। उसे सहलाया। गले में रस्सी बाँधकर उसे ले जाने लगा।

जब गौ जान गई कि वह अपने गाँव नहीं जा रही थी, तो वह अपने गाँव की ओर भागने लगी। उसी समय वहाँ पन्नालाल आया था। चोर की सहायता करके, वह उसे उसके घर ले गया था।

पन्नालाल ने चोर की, एक और तरह से भी मदद करने की सोची। उसने पटवारी शामलाल के घर जाकर कहा कि चोर ने काफी सजा भुगत ली है। उसे और सजा देने की जरूरत नहीं है। पटवारी भी पन्नालाल की बात न टुकरा सका। जल्दी ही चोर की गौ ठीक हो गई। चोर आकर उसे ले गया।

कृष्णावतार

सारे गोकुल में हलचल मचने लगी। सब यात्रा की तैयारी में लग गये। समान गाड़ियों पर लाद दिया गया। घी और दूध के घड़ों को ठीक तरह रखा गया। धान्य आदि को बोरों में डाल दिया गया। तरह तरह के ताले, बर्तन, चाकू, घंटे और अन्य उपकरण हिफ़ाजत से रख दिये गये। शीघ्र ही जोश के साथ यात्रा की तैयारी समाप्त हुई।

जो बलवान थे, वे अपने पशुओं को आगे आगे हाँककर ले गये। उनके पीछे गाड़ियाँ निकलीं और उनके पीछे लोग चले। और तरुण स्त्रियाँ, आपस में गप्प करती निकलीं। लंगड़ों, अन्धों और बूढ़ों की नौजवानों ने सहायता की।

इस प्रकार गोकुल, बृन्दावन में पहुँचा। बुजुर्ग गोपालकों ने घर बनाने के लिए स्थल चुने। गाड़ियों को अर्ध चन्द्राकार में खड़ा कर दिया। कई ने झोंपड़ियाँ बनाईं। कई ने लता कुँजों में डेरा डाला। कई पेड़ों के नीचे ही रहने लगे।

कई ने काँटों की झाड़ियों से पशुओं के बाड़े बनाये। एक ही दिन में बृन्दावन गोपालकों का हो गया। कुछ ही दिनों में सजी धजी गोपिकाओं और शान से

चलनेवाले गोपालकों के कारण उस प्रदेश में रौनक-सी आ गई।

समय के साथ गोपालकों की समृद्धि भी बढ़ती गई। पशुओं की संख्या बढ़ती जाती थी। जीवन सुख से कट रहा था। कृष्ण तेरह वर्ष का हो गया। गरमियाँ आईं। स्वस्थ पशुओं को तरह तरह की बीमारियाँ होने लगीं। वे काँप उठते और खड़े न हो पाते। मुखों से झाग निकलती। गरदनें लटक जातीं। खुर फूट जाते।

इन बीमारियों को ठीक करने के लिए गोपालकों ने मन्त्र पढ़वाये। दवा दारू

करवाई, पर कोई फ़ायदा न हुआ। उन्हें न सूझा कि क्या किया जाये।

ये रोग यमुना नदी के तट के प्रान्त में रहनेवाले जंगली जानवरों में भी पाये गये। गोपालक भी बीमार पड़े। सब भयंकर रोगों के कारण परेशान होने लगे। उनकी सारी बस्ती दुर्गन्धित हो उठी।

नन्द, यशोदा, रोहिणी भी बीमार हुए। कृष्ण को लगा, अगर वह जगह न छोड़ी गई तो काम न बनेगा। उसने बलराम से बातचीत की और अपने पशुओं को लेकर वे एक कोस आगे जाकर रुके। और गोपालकों ने भी उन्हीं की तरह किया। जो यों चले गये थे, उनको किसी प्रकार की बीमारी न हुई।

नन्द ने जाने से इनकार कर दिया। "यह हमारी जगह है। कुछ भी आये, हमें उसे यहीं सहना होगा। मैं इतने सारे बन्धु-बान्धवों को लेकर कहाँ जाऊँ?" उसने कहा।

जब नन्द, यशोदा और रोहिणी ने, जो बीमार थे, यूँ जिद पकड़ी तो कृष्ण को न सूझा कि क्या किया जाये।

उन गोपालकों में, विदेह देश से आया हुआ एक बूढ़ा गोपालक था। उसने प्रमुख गोपालकों से कहा—"देखो भाई, हम पशुओं के भरोसे जिन्दगी बसर कर रहे हैं। पशुओं का रक्षक है, शिव। जब तक हम शिव की अर्चना नहीं करेंगे, तब तक हमारे कष्ट दूर न होंगे। यूँ चुप बैठे रहने से कुछ न बनेगा। किसी अच्छे ब्राह्मण को बुलवाकर शिव की अच्छी तरह पूजा करवाओ।"

इस वृद्ध की बात सुनकर गोपालकों ने ब्राह्मणों को बुलवाया और शिव पूजा के लिए आवश्यक व्यवस्था की।

शिव की एक सप्ताह तक पूजा की गई, अभिषेक वगैरह किये गये। नैवेद्य चढ़ाया गया।

सात दिन निर्विघ्न रूप से शिव की पूजा होने के बाद, सातवें दिन दुपहर को एक ब्राह्मण पूजा के आवेश में आ गया और उस अवस्था में वह जोर से हँसा, उछल कूदकर नाचने लगा।

"मुझे शिव ने कैलाश से भेजा है। 'अरे शंखकर्णा, यमुना के तट पर प्राणी रोगी हो रहे हैं, जाकर उनकी मदद करो।' तुम्हारी पूजा से शिव सन्तुष्ट हैं। जानते हो, तुम सब क्यों बीमार हो रहे हो? द्वापर युग में, जब राक्षसों ने भूलोक को पीड़ित करने लिए तरह तरह के जन्म लिये, तो कालकलि राक्षस, विरोचन के लड़के ने एक जहरीले बेल के पेड़ के रूप में यमुना नदी के दक्षिण तट पर जन्म लिया। उस वृक्ष के चारों ओर उस राक्षस के अनुयायी, जहरीले पेड़ों और काँटों की झाड़ियों के रूप में पैदा हुए। उस जहरीले बेल के पेड़ की हवा से ही तुम सब और तुम्हारे पशु बीमार हुए हैं।

उसके कारण पानी भी बिगड़ गया है। इस जहरीले पेड़ को उखाड़ने की शक्ति, नन्द के पुत्र बलराम में है। यदि वह यह करने के लिए मान गया तो तुम सब का कल्याण होगा। यह बात तुम्हें बताने के लिए परमशिव ने मुझे भेजा है। जो कुछ मैंने कहा है उसे तुरन्त करो। अब मैं जा रहा हूँ। मुझे आज्ञा दीजिये।"

ये बातें कहते कहते ब्राह्मण का मूर्छावेश जाता रहा। ब्राह्मणों ने सन्तुष्ट होकर शिव की अर्चना समाप्त कर दी।

तुरत गोपालकों ने बलराम को बुलवाया और उसको सारी बात बताई।

सब सुनकर उसने कहा—"ईश्वर की आज्ञा हुई है। माँ बाप की रक्षा करने और कुल की रक्षा करने से अच्छा मौका मिले तो और चाहिए ही क्या? इस जहरीले बेल के पेड़ को अवश्य उखाड़ दूँगा।"

कृष्ण ने ब्राह्मण को नमस्कार किया। शिव के समक्ष साष्टान्ग किया। शिवालय की परिक्रमा की, फिर बलराम की ओर देखा।

बलराम ने भी वैसा ही किया। फिर वे दोनों कुल्हाड़ी आदि लेकर जहरीले पेड़ की ओर गये।

शिव की पूजा के कारण कई गोपालक स्वस्थ हो गये। वे भी जोर शोर के साथ बलराम और कृष्ण के साथ पेड़ उखाड़ने निकल पड़े।

उन्हें यह जानने में भी देरी न लगी कि जहरीला पेड़ कहाँ था। ज्यों ज्यों वे जंगल में चलते जाते थे, त्यों त्यों कुछ पेड़ों से आती दुर्गन्ध सहना उनके लिए कठिन हो गया।

जल्दी ही वह भयंकर वृक्ष उनके सामने आया। वह बहुत ऊँचा भूत-सा लगता था। उसके चारों ओर काफी दूर तक काँटों की झाड़ियाँ थीं। बलराम और कृष्ण चाकू से उन झाड़ियों को काटते, रास्ता बनाते, उस विष वृक्ष के पास गये।

उस विष वृक्ष का तना ही तीस हाथ चौड़ा था। उसके फल हाथी के सिर के बराबर थे। उसकी टहनियाँ दूर दूर तक बढ़ी हुई थीं। दुर्गन्ध उस पेड़ के फलों से आ रही थी। इसलिए बलराम और कृष्ण ने पहिले उनको तोड़ देने की ठानी।

बलराम और कृष्ण फलों को, कलियों को, फूलों को....जो कुछ हाथ में आता, उनको तोड़ फेंकने लगे। जो उनके हाथ में न आये, उनको लाठियों से और पत्थरों से तोड़ने लगे।

वे टहनियों को तोड़ने लगे। सारे गोपालक हो हल्ले के साथ इस काम में लग गये। थोड़ी ही देर में उस पेड़ पर एक फल भी न रहा।

बलराम और कृष्ण जब इस काम में लगे हुए थे, उस प्रान्त में चरनेवाली कुछ गौवों ने उन पर हमला किया।

वे मामूली गौ बछड़े न थे। वे, वहाँ पेड़ और झाड़ियों के रूप में पैदा हुई राक्षसों की पत्नियाँ थीं। उनके बच्चे थे। वे विष वृक्ष के आस पास रहते। उसके फल खाकर स्वस्थ रहते।

कृष्ण उन पशुओं को मारने लगा। राक्षस अपने असली रूप में खून उगलते मरने लगे।

गोमाता के रूप में राक्षसियाँ क्रुद्ध हो उठीं और अपने बच्चों की मृत्यु का बदला लेने के लिए कृष्ण पर अपनी सींगों से हमला करने लगीं।

कृष्ण ने उनको आसानी से दूर हटा दिया। उसके बाद उसने जहरीले पेड़ को पूरी तरह उखाड़ दिया।

गौ बालकों ने मिलकर उस पेड़ के टुकड़े टुकड़े किये। काटों को बटोरा, मरे राक्षसों को एक जगह जमा किया और फिर उनको आग लगा दी। देखते देखते ऊँची ऊँची लपटें उठने लगीं। वे पेड़, झाड़ियाँ, राक्षसों के शव, सब जल जलाकर जल्दी ही राख हो गये।

गोपालक पसीने से तर हो गये थे। वे थक थका गये थे। वे सब रेत पर चलते चलते यमुना नदी के किनारे गये।

वे बहुत देर तक नहाते, तैरते रहे। खेलते, कूदते, गाते, रहे। वे अन्धेरे होने तक खेलने कूदने में लगे रहे। घर से लाया हुआ भोजन किया। पान लिया। आराम करके, वे मजे करते घर पहुँचे।

दिन बीतते जाते थे। मनुष्यों और पशुओं की बीमारियाँ जाती रहीं और इतने में गरमियाँ भी खतम हो गईं।

वर्षा काल के आरम्भ की सूचना में आकाश में मेघ छाने लगे। मेघ गर्जन सुनकर सब में नया उत्साह आने लगा। जल्दी ही वर्षा होने लगी। ओले भी पड़ने लगे। खूब वर्षा हुई। भूमि पर हरियाली फूट पड़ी। नाले नदी भर भरा गये।

ऐसे आनन्द के समय में, विदेह देश में कुछ ऐसे भयंकर उत्पात होने लगे कि लोग डरने घबराने लगे। उस प्रान्त में रहनेवालों में कुम्भीर के पास बहुत-सी गौव्वें थीं। वह बड़ा प्रसिद्ध दानी और धर्मात्मा था। बिना किसी को न कहे,

वे हर किसी को दान दिया करते। वह यशोदा का भाई था। उसके पुत्र का नाम श्रीघाम था और नीला उसकी लड़की का नाम था।

जब विष्णु का तारकासुर से युद्ध हुआ, तो उसने उस युद्ध में कालनेमि के सातों लड़कों को मार दिया था, वे सातों, उससे बदला लेने के लिए, कुम्भक के यहाँ साँड़ों के रूप में पैदा हुए। उन्होंने बड़ा उत्पात मचाया। वे गौव्वों में जाते, उनको और बैलों को मार देते। अगर कोई गोपालक उनको रोकता तो वे उनको कुचल देते। वे दीवारों को भी सींगों से उखाड़ देते, बाड़े के पशुओं को भी मार देते। यह उनका रोजमर्रे का काम था।

कुम्भक ने, साँड़ों के रूप में सातों राक्षसों को पकड़ने की बड़ी चेष्टा की। बड़े बड़े योद्धा उनसे भिड़ने गये, पर मार दिये गये। जब मारने के लिए कुम्भक के यहाँ कोई उनके लिए न रहा, तो विदेह राज्य के ग्रामों पर उन्होंने धावा बोला और वहाँ के पशुओं और मनुष्यों को मारने लगे। तंग आकर, लोगों ने जाकर मिथिला नगर के राजा के पास जाकर कहा—"कुम्भक के यहाँ पैदा हुए साँड़ हमारे पशुओं को मार रहे हैं। हमारी फसलें उजाड़ रहे हैं। अगर आपने उनको मारकर हमारी रक्षा न की तो हम किसी और राज्य में चले जायेंगे।" उन्होंने फरियाद की।

अरण्य पुराण

[८]

"भाई" के रोंगटे खड़े हो गये थे।

"तुम्हें धोखा देने शेरखान महीने भर के लिए कहीं चला गया था। कल ही वह पहाड़ पार करके, लोमड़ी के साथ तुम्हें खोजता आया है।" भाई ने झाग उगलते हुए कहा।

मौवली ने मुख बिचकाकर कहा—"शेरखान का मुझे डर नहीं है। पर लोमड़ी बड़ी तेज़ है। मक्कार है।"

भाई ने ओंठ चाटते हुए कहा—"डरो मत। कल मैं उस लोमड़ी से मिला था। उसने सब कुछ मुझे बता दिया। सब सुनकर, मैंने उसकी रीढ़ ही तोड़ दी। आज जब तुम शाम को गाँव वापिस जा रहे होगे, तो शेरखान तुम पर धावा बोलना चाहता है। अब वह वाईन गंगा की बड़ी घाटी में है।"

"आज उसने खाना खाया है कि नहीं या खाली पेट शिकार कर रहा है?" मौवली ने पूछा।

यह बहुत ही मुख्य प्रश्न है। इस प्रश्न के उत्तर पर ही मौवली की जिन्दगी और मौत निर्भर है।

"सवेरे ही उसने सूअर मारा है। खूब पेट भरकर खाया है, शेरखान की बात तो तुम जानते ही हो? बदला लेने के लिए भी वह थोड़ी देर के लिए भूखा नहीं रह सकता।" भाई ने कहा।

"पगला है। बच्चे से भी बत्तर है। खा पी लिया है तो वह सोच रहा है कि

उसके उठने तक मै उसकी इन्तजार करता रहूँगा? अब वह कहाँ सोया हुआ है? अगर हम पाँच दस होते तो उसकी खबर लेते। जब तक उनको गन्ध नहीं आता तब तक ये भैंसे उस पर जायेंगे नहीं? मैं इनकी भाषा जानता नहीं हूँ। क्या इनको उस तरफ़ ले जाया जाये ताकि इनको उसकी गन्ध आये?" मौवली ने पूछा।

"ताकि गन्ध न आये, इसलिए वह गंगा में बहुत दूर तक तैरकर गया है।" भाई ने कहा।

"यह जरूर लोमड़ी की चाल होगी। शेरखान में भला इतनी अक़्ल कहाँ है?" मौवली मुख में अंगुली रखकर कुछ देर तक सोचता रहा। "अगर इस बड़ी घाटी के लिए मैदान में से गये तो फासला आधे मील के करीब होगा। इन पशुओं को जंगल में से ले जाकर, बड़ी घाटी में हाँक सकता हूँ। परन्तु शेरखान दूसरे सिरे से चुपचाप खिसक जायेगा। इस सिरे पर जरूर उसे रोकना है, क्या तुम झुण्ड को दो टुकड़ियों में नहीं कर सकते?"

"यह काम तो मुझ से नहीं होने का। इसके लिए ठीक व्यक्ति लाया हूँ।" कहता वह एक गढ़े में कूदा। उसमें से एक बड़ा सिर ऊपर निकला। उसी समय शिकार खेलनेवाले भेड़िये की आवाज प्रतिध्वनित हुई।

"अकेला अकेला" मौवली खुशी में तालियाँ बजाने लगा। "मैं जानता था कि तुम मुझे भूलोगे नहीं। अब हमारे हाथ में बहुत-सा काम आ पड़ा है। इस झुण्ड को दो भागों में बाँट दो। एक तरफ़ मादाओं और बछड़ों को और दूसरी ओर नरों को।

अकेला झुण्ड के बीच में से भागा और मौवली की इच्छानुसार उसको दो भागों में बाँटने लगा। एक ओर मादा और बच्चे आ गये। वे बड़ी आँखें करके पैरों से भूमि खरोंच रहे थे। दूसरे में नर भयंकर रूप से फुँकार रहे थे। पर वे मादाओं की तरह खतरनाक न थे। बच्चों को बचाने के लिए मादा ही अधिक भयंकर हो जाते थे।

जल्दी की झुण्ड अलग अलग हो गये। छः गड़रिये भी यह काम नहीं कर सकते थे।

"फिर क्या किया जाय? ये फिर मिल सकते हैं।" अकेला ने कहा।

"नर पशुओं को बाँयी ओर हाँको अकेला।" कहता मौवली "राम" पर सवार हो गया और चलने लगा। "भाई, हमारे झुण्ड के चले जाने के बाद दूसरे झुण्ड को घाटी के नीचे हाँक देना।"

"घाटी में कितनी दूर ले जाऊँ?" भाई ने पूछा।

"तुम वहाँ ले जाना, जहाँ घाटी की चट्टान इतनी हो कि शेरखान न कूद सके। जब तक हम दूसरे सिरे से नहीं

पहुँच जाते, तब तक तुम उनको वहीं रखना।" मौवली ने कहा।

अकेला जब नर पशुओं के सामने खड़ा होकर चिलाया, तो वे अकेला की ओर लपके। अकेला उनका चकमा देता, घुमा फिराकर उनको घाटी के मुख की ओर ले जाने लगा। इस बीच मादा पशुओं को भाई घाटी के अन्त में ले गया। शेरखान घाटी में सो रहा था। वैसे ही डरपोक था। खा पी लेता था, तो लड़ भी न पाता था। घाटी के शुरु से अन्त तक ढलान थी। उसके दोनों

तरफ़ ऊँची पहाड़ियाँ थीं। यदि घाटी की तलहटी में मादा पशुओं का झुण्ड रखा गया और नर पशुओं को दूसरी ओर से भगाया गया, तो शेरखान कुचलकर मर जायेगा। यदि वह कुचल न दिया गया और मादा पशुओं की ओर गया तो वे उसे सींगों से मार देंगी।

यह मौवली की योजना थी।

मौवली अपने "राम" के साथ नर पशुओं के झुण्ड के साथ लम्बे रास्ते से पहाड़ पर से घाटी के ऊँचे सिरे पर पहुँचा। अभी तक पशुओं को शेरखान की गन्ध नहीं आई थी। दोनों ओर की पहाड़ियाँ बड़ी ऊँची थीं। उन पर बेलें लटक रही थीं। शेरखान उन पर नहीं चढ़ सकता था। वह घाटी में फँस गया था।

"हम शेरखान को यह बतायें कि हम यहाँ आ गये हैं।" कहते हुए मौवली हाथ मुख के पास रखकर जोर से चिल्लाया। उसकी आवाज घाटी में जोर से गूँजी।

शेरखान अंगड़ाई लेते हुए उठा। उसने पूछा—"कौन आवाज दे रहा है?"

"मैं, मौवली। चोटी पर मिलने का समय हो गया है। चलो।" कहकर मौवली चिल्लाया—"अकेला। झुण्ड को भगाओ। "राम" तुम भागो।"

नर पशुओं का झुण्ड तेजी से घाटी में भागने लगा। अकेला शिकार की आवाज करने लगा। झुण्ड के भागने से पत्थर आदि लुढ़कने लगे। ज्यों ज्यों वे नीचे लुढ़कते जाते, उनकी तेज़ी त्यों त्यों बढ़ती जाती। "राम" को शेर की गन्ध आई और वह जोर से चिल्लाया। (अभी है

६२. पीनान्ग द्वीप में बौद्ध धर्म

मलाया का पीनान्ग द्वीप, ब्रिटिश के आधीन आनेवाला प्रथम सुदूर पूर्व का प्रदेश था।
यहाँ के "केकलोकीस" नाम के बौद्ध मठ का प्रांगण ३० एकड़ का है। इसके गोपुरों में सबसे ऊंचा सात मंजिलों का है।

Photo by K. P. A. Swamy
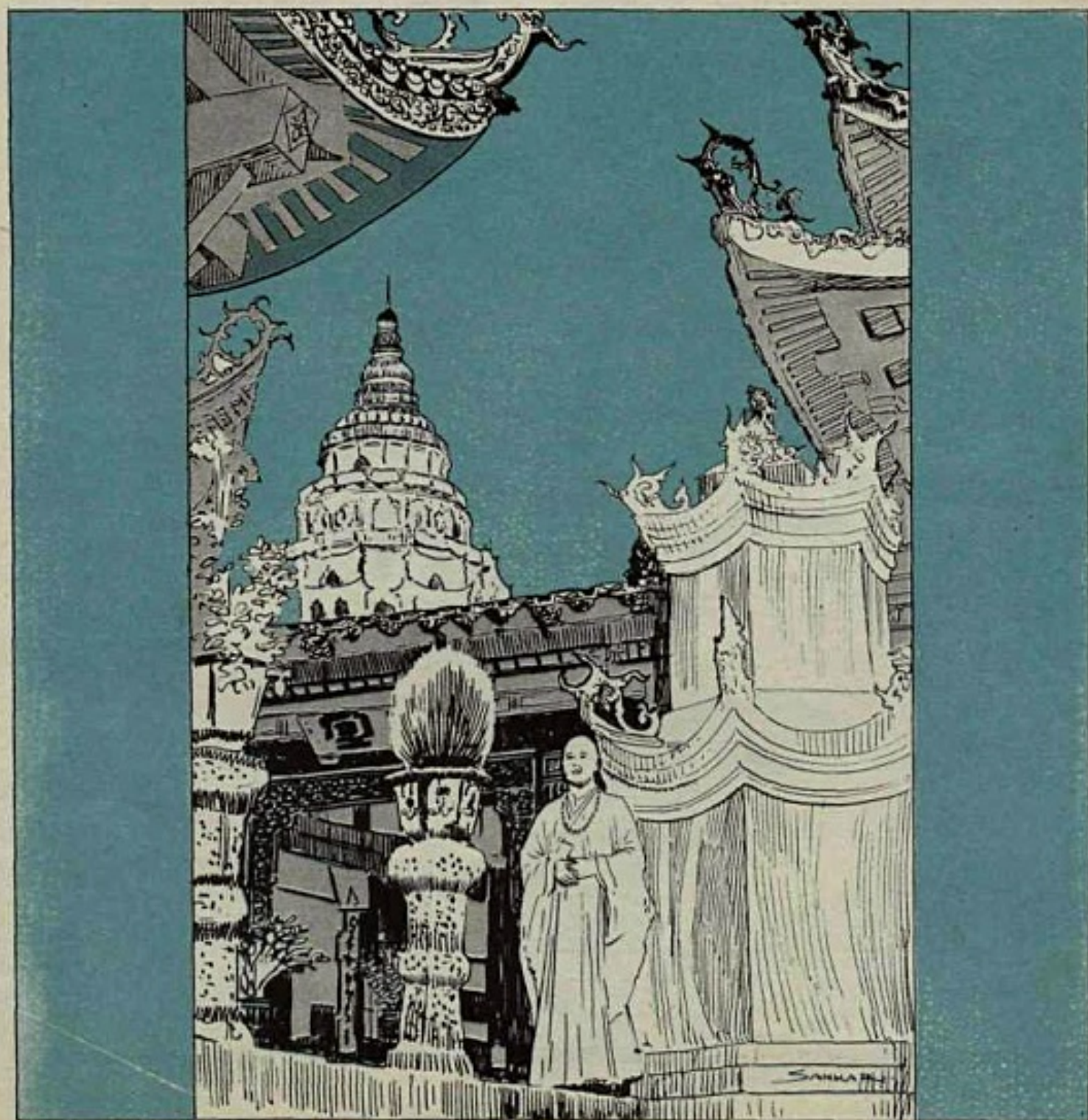
पुरस्कृत परिचयोक्ति

खेल कूद है काम हमारा!

प्रेषक: रविन्द्रसिंह - नई दिल्ली

Photo by Madan Gopal
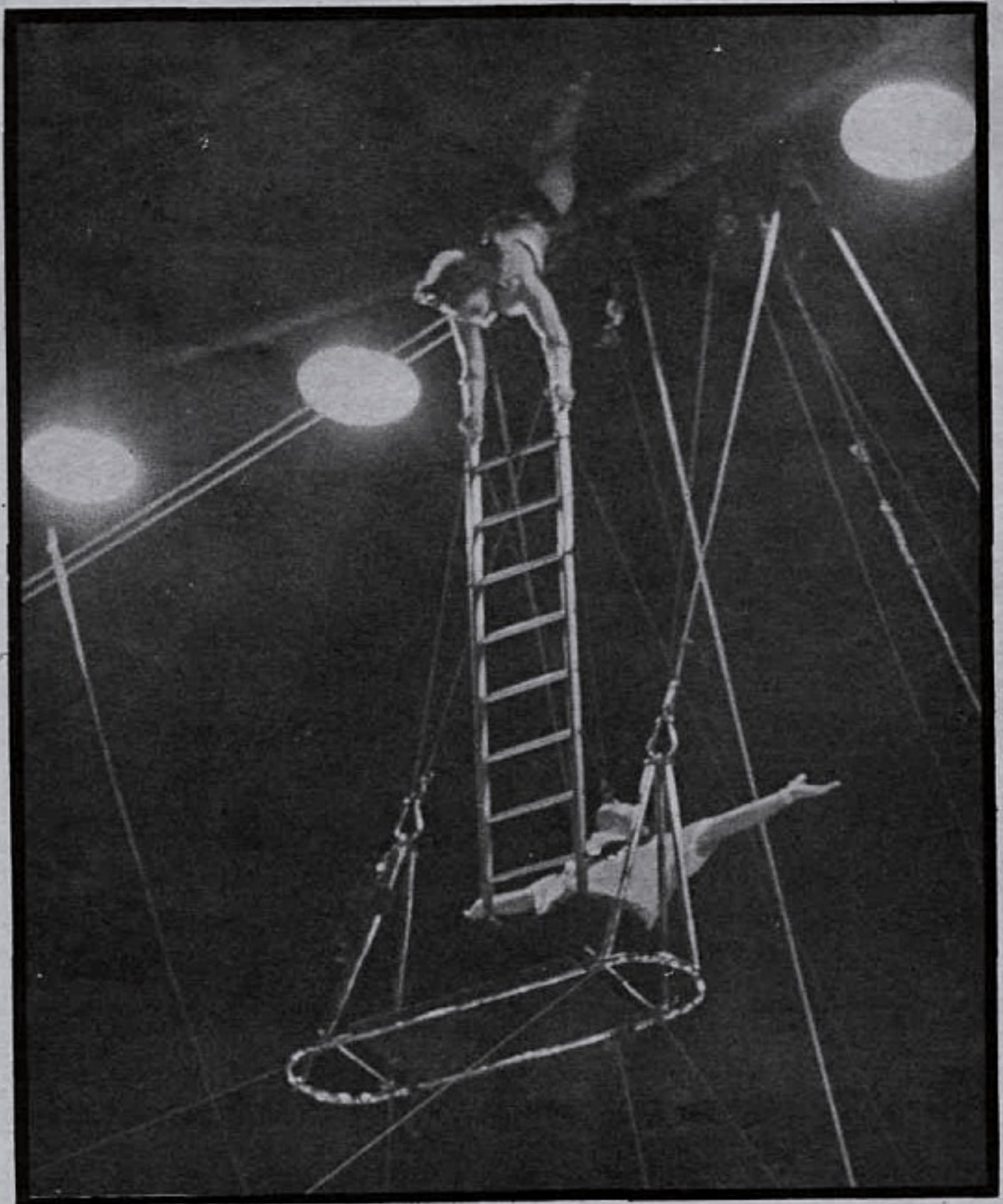
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

इसमें है अपना गुजारा !!

प्रेषक :
गोविन्दसिंह - नई दिल्ली

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

अप्रैल १९६७ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें !

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ फरवरी १९६७ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

फरवरी – प्रतियोगिता – फल

फरवरी के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : **खेल कूद है काम हमारा !**

दूसरा फ़ोटो : **इसमें है अपना गुज़ारा !!**

प्रेषक : **रविन्द्रसिंह,**
II K/1, लाजपत नगर, नई दिल्ली-१४

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'